# मुख़्तार-ए-हिंद

## हक़ हादी जान-ए-जाँ और पैग़ाम-ए-शऊर

## सद्गुरू प्राणनाथ जी एवं जागनी लीला

प्रकाशक
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा

# मुख़्तार-ए-हिंद

हक़ हादी जान-ए-जाँ और पैग़ाम-ए-शऊर
सद्गुरू प्राणनाथ जी एवं जागनी लीला

**समर्पण**

सरकार हादी-उल-दारैन
सरदार महमत साहिबुज्ज़माँ

**प्रकाशक**
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा

| | | |
|---|---|---|
| पुस्तक का नाम | – | मुख़्तार–ए–हिंद |
| सँस्करण | – | प्रथम आवृत्ति |
| प्रतियां | – | एक हज़ार मात्र |
| प्रकाशन वर्ष | – | बुद्ध शाका 334 (2012 ई०) |
| प्रस्तुति | – | श्री राजन स्वामी |
| प्रकाशक | – | श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ<br>नकुड़ रोड़, सरसावा,<br>सहारनपुर, उ०प्र० |
| आलेखं | – | नरेश कुमार मार्तण्डं |
| संशोधन | – | निशांत परनवी |
| न्यौछावर | – | ..... |
| प्रिन्टर्स | – | बाला प्रिन्टर्स, जालंधर |

# प्राक्कथन

प्राणाधार ! धर्मप्राण सुन्दरसाथ !

मध्य काल में मुग़ुल सत्ता के चरम आत्तायी उन्माद से समस्त भारत रक्त रंजित होकर त्राहि माम-2 कर रहा था। इसमें विशेषत: पँजाब जो कि ऋषियों-मुनियों, पीरों-फ़कीरों एवं वीरों की भूमि रही है। यहां शिष्टाचार तथा आध्यात्म की धारा निरंतर प्रवाहित रही है। इसमें आधुनिक पँजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली एवं पकिस्तानी पँजाब भी सम्मिलत है।

ऐसी ही विषम परिस्थिति में सद्गुरू श्री प्राणनाथ जी का सन्देश जन-जन तक पहुँचाने और ब्रह्मज्ञान स्वरूप क़ुल्ज़ुम साहिब के प्रचार-प्रसार हेतु भैय्या सीताराम जी को श्री जी ने ध्यान अवस्था में निर्देश देकर कमालिया (पंजाब) में भेजा। प्राय: यहां पर मुग़ुलों का वर्चस्व होने से प्रथम प्रयास में तारतम्य ज्ञान का प्रचार-प्रसार न हो सका। अत: भैय्या जी वापस लौट गए, परन्तु गुम्मट साहिब में श्री जी साहिब जी ने भैय्या सीताराम जी को दर्शन देकर पुन: पंजाब जाने का आदेश दिया तथा दर्शन भगत नामक नानक पंथी को तारतम्य ज्ञान प्रदान करने का निर्देश दिया। तत्पश्चात् उन्होने ब्रह्मज्ञानी भाई सरदार दरबारा सिंह जी को सावचेत करके तारतम्य ज्ञान प्रदान किया। अंतत: कमालिया, हड़प्पा, मिण्ट गुमरी, मल्काहांस और पाक पटन इत्यादि में जागनी स्थल स्थापित हुए।

सन् 1947 में राजनीतिज्ञों द्वारा किये गये भारत विभाजन ने हिंदु, मुस्लिम, सिख एवं निजानंद सम्प्रदाय के अनुयायियों को भी अत्यंत प्रभावित किया। परन्तु इस आपदा काल में भी कुछ सुन्दरसाथ ने जैसे कि धर्मप्राण माता साध्वी ठाकरी बाई जी

कमालियावासी अपनी जान की परवाह न करते हुए श्री जी के स्वरूप क़ुल्ज़म साहिब को अपने सिर पर धारण कर जालंधर में ले आयीं। पुनः सुंदरसाथ ने ब्रह्मवाणी स्वरूप तारतम्य ज्ञान का गुंजायमान अबोहर, फाज़िल्का, अमृतसर, जालंधर, करनाल, दिल्ली, कानपुर, रत्नपुरी (मुजफ़्फ़रनगर) एवं वड़ोदरा (गुजरात) इत्यादि नगरों में किया। आज भी सुन्दरसाथ द्वारा ब्रह्मज्ञानी भैय्या सीताराम जी को श्रदाजंलि देने हेतु जालंधर में बसंत पंचमी का वार्षिकोत्सव धूम-धाम से मनाया जाता है।

प्रस्तुत पुस्तक में सद्गुरू प्राणनाथ जी एवं उनके अनुगामियों द्वारा प्राचीन पंजाब अर्थात् उत्तर भारत में जागनी लीला को ही प्रमुख रूप से दर्शाया गया है। इस सरंचना को अपने ही हरमनप्रिय विद्वान सुंदरसाथ श्री नरेश जी टण्डन, जालंधर ने अथक प्रयास करके गागर में सागर के समान ग्रंथ रूप में लिपिबद्ध किया है, जिसके लिए वह श्री जी की अनुशंसा के सुपात्र है। इस ग्रंथ का आधार वृतांत मुक्तावली, पंजाब की बीतक, परमहंस महाराज रामरतन दास जी की बीतक एवं ब्रह्मलीन सद्गुरु धर्मवीर श्री जगदीश चंद्र जी की आत्मकथा सत्य प्रकाश है। इस का रचना काल खण्ड 1638-2069 व्रि० स०, 2012 ईस्वी तक है।

आशा है कि इस सूक्ष्म प्रयास को सुंदरसाथ ग्रहण करके आध्यात्मिक रहनी-करनी के परम पद को प्राप्त करेगा। पुस्तक में यथा संभव त्रुटियां दूर करने का प्रयास रहा है, परन्तु मानवीय भूल-चूक से रहने वाली त्रुटियों को संज्ञान में लाने की कृपा करें, जिससे कि आगामी प्रकाशन में सुधारा जा सके।

आपका

राजन स्वामी

सँस्थापक

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा

# श्री जी साहिब जी मेहरबान

साथियों! समस्त पवित्र धर्मग्रन्थो में जिसको क्षर, अक्षर से भिन्न अक्षरातीत परब्रह्म कहा गया है, वही हमारे सद्गुरु है। क्योंकि सद्गुरु ही परब्रह्म की सम्पूर्ण पहचान कराने की शक्ति रखते है। वही समर्पित अनुयायी साधक को आत्म-साक्षात्कार करा सकते है। ठीक वैसे ही जैसे कि पारस सोना तो बना सकता है, लेकिन पारस नहीं बनाता है। परन्तु सद्गुरु तो दीपक के समान है। जैसे एक दीपक से अनेक दीपक प्रंज्ज्वलित हो जाते हैं और सभी एक समान प्रकाश देते हैं। इसी प्रकार सच्चे सद्गुरु विरले ही होते हैं जो साधक को अपने समान ही बनाकर ब्रह्मज्ञान से प्रफ़ुल्लित करते है। यही सच्चे सद्गुरु की वास्तविक पहचान है।

हमें ऐसे ही सद्गुरु की खोज करनी चाहिए। सद्गुरु की प्राप्ति भी परब्रह्म की मेहर (कृपा) से ही संभव है। उन्हें सभी के अंतस्करण की वास्तविकता का ज्ञान है। हमें सद्गुरु की पहचान करके उनके स्वरूप को अपने हृदय में अंगीकार कर लेना चाहिये। क्योंकि यदि हम सद्गुरु पर तन-मन एवं धन से न्यौछावर हो जाते हैं, तो फिर सद्गुरु भी समर्पित साधक पर ही सर्वस्व न्यौछावर कर देते हैं। ठीक उसी प्रकार जैसा कि महाराजा छत्रसाल जी ने किया, प्रत्युत्तर में श्री जी साहिब जी ने जागनी की संपूर्ण शोभा महाराजा छत्रसाल जी को दे दी। यथा:-

**पहले दाता हम भए, सद्गुरु को दीन्हो शीस।**
**पीछे दाता सद्गुरु भए, सब कुछ किए बख़्शीस॥**

अनादि अछरातीत परब्रह्म को ही शब्दातीत एवं सद्गुरू भी

कहा है, क्योकि उसकी शोभा शब्दों से परे है। स्वप्न की बुद्धि तथा जिहवा भी उसका वर्णन नही कर पाती है। परन्तु सद्गुरु की कृपा से अंधे को दिखता है, गूँगें बोलते हैं तथा लंगड़ा भी पहाड़ पर चढ़ सकता है। निसंदेह कृपा से तो समस्त असाधारण कार्यो को भी करवाया जा सकता है। सच्चिदानन्द स्वरुप परब्रह्म की शोभा अनंत है। वे किसी भी मिथ्या तन को अलौकिक शोभा प्रदान करते है और उससे कार्य कराते है। अतः करने वाले स्वयं आप ही होते हैं।

परब्रह्म को धर्म ग्रन्थों में सच्चिदानंद भी कहा है। उनके सत्य स्वभाव को सार्मथ्यवान् अक्षर ब्रह्म व स्वयं को चिदघन चेतन कहा है। आन्नद अंग को आन्नद शक्ति कहा जाता है। इसी सामर्थ्य रूपी अक्षर को अपरिवर्तनीय अद्धितीय-अलौकिक कहा है।

परब्रह्म ने सर्वप्रथम यह अपने दिल मे लिया कि अपने आनन्द अंग श्यामा जी को सत अंग अक्षर ब्रह्म की लीला तथा अक्षरब्रह्म को अपनी विलास लीला एवं अपनी महिमा की पहचान कराई जाय। इसी कारण परब्रह्म के सत अंग तथा आन्नद अंग में एक दूसरे की लीला को जानने-समझने की उत्सुकता जगी। अंततः इसी कारण प्रेम-संवाद हुआ। परिणामतः परमधाम से सच्चिदानंद स्वरूप शक्ति यहाँ पृथ्वी लोक पर ब्रजमण्डल में श्रीकृष्ण व सखियों के रूप अवतरित हुई। यह वर्णन पहले से ही समस्त धर्म ग्रन्थों में प्रमाण के लिए लिखवाया हुआ था। ग्यारह साल बावन दिन की गोकुल लीला एवं फिर मथुरा

की लीला करके आप दिव्य अखण्ड बेहद भूमि वृंदावन पहुचे, वहां स्वयं परब्रह्म के स्वरूप बांके बिहारी एवं ब्रह्मात्माओं/सखियों द्वारा दिव्य-अलौकिक तन धारण करके अखण्ड रास-लीला बेहद भूमि में की, जो कि अभी भी अखण्ड है। सखियों द्वारा मन के मनोरथ पूरे न होने के कारण इस तीसरे जागनी के ब्रह्माण्ड की रचना करवाई। परब्रह्म की शक्ति जो ब्रज में अवतरित हुई थी पुनः मुहम्मद साहिब के स्वरूप में अरब में आई तथा तिरसठ (63) वर्ष तक अरबों को पवित्र क़ुरान-हदीस के द्वारा अद्वैत एवं शरः अर्थात् शरिअत-तरीकत की नियम पद्धति का ज्ञान प्रदान किया। लेकिन उस समय अंकुर न होने से कोई उनके दिव्य-अलौकिक स्वरूप की लीला को पहचान नही पाया। तत्पश्चात् हिजरी हज़ार सन (99०) यानि नौ सौ नब्बे वर्ष नौ मास के पश्चात अर्थात् विक्रमी संवत् सोलह सौ अड़तीस (1638 ई० 1581) माह अश्विन शुक्ल पक्ष चतुदर्शी (14) के दिन पुनः वही शक्ति परब्रह्म के आन्नद अंग श्यामा जी का आवेश लेकर सिंध(मारवाड़) के उमर-कोट गांव में श्री मतू मेहता नामक एक व्यापारी के यहां अवतरित हुई। (यह स्थान अब पाकिस्तान के सिंध प्रान्त में है।)

यह संयोग इस प्रकार से बना कि धर्म परायण व्यापारी श्री मतू मेहता जी की धर्मपत्नी कुवंरबाई ने एक दिन चद्रंमा को अपनी गोद में उतरते देखा। तत्पश्चात् दम्पति द्वारा विद्वदजनों व ज्योतिषियों से ज्ञात करने पर उन्होने गणना करके बताया कि आपके यहाँ परब्रह्म स्वरूप एक दिव्य शक्ति बालक रूप में अवतरित होगा तथा उसका

नाम देवचंद्र होगा। यह शक्ति पहले ब्रृज में भी आ चुकी है। किंदवंती है कि देवचंद्र जी की बाल लीला के समय भूत-प्रेत भी उनका स्पर्श पाकर मुक्ति प्राप्त करते थे।

निजानंद अंग स्वरूप देवचंद्र जी दुनिया के प्रति निर्लेप का भाव रखते हुऐ सदैव परब्रह्म के चिन्तन में तल्लीन रहते थे कि उन्हें परबह्म के धाम स्वरूप एवं लीला का ज्ञान कब और कैसे होगा? दुनिया के किसी भी भौतिक पदार्थ की उनको इच्छा नही थी। उनका मन केवल अपने प्रियतम परब्रह्म स्वामी की याद में मग्न रहता था। उन्होने एक बार मन में यह दृढ़ निश्चय किया कि परब्रह्म प्रियतम को प्राप्त करना ही है। अत: राज परिवार की एक बारात के पीछे दूसरे शहर भुज में पहुँचने का विचार बनाया, लेकिन वह पैदल और बारात की सवारी में अंतर होने से रास्ता भूल गये। तब सर्वप्रथम एक सैनिक या ख़िज्र अलै० के स्वरूप में परब्रह्म स्वामी ने दर्शन देकर मदद की अंतत: भुज नगर पहुँचकर हरिदास जी को लौकिक गुरू धारण किया तथा ब्रह्मज्ञान की जिज्ञासा शांत करने हेतु साधना प्रारम्भ की। अपनी प्रेम सेवा की साधना से अपने सदगुरू हरिदास जी को प्रसन्न किया।

आठ वर्ष तक सेवा करने के बाद एक दिन अखण्ड गोलोक के बाल मुंकुद जी के साक्षात् दर्शन प्राप्त किए एवं अखंड व्रृज लीला का साक्षात्कार किया। अकेली संतान/पुत्र वियोग में व्याकुल मतू मेहता भी परिवार के साथ उसी नगर में आकर रहने लगे। सोचा कि उन्ही की इच्छा अनुसार चला जाये। वहीं रहकर आजीविका-हेतु व्यापार इत्यादि का

कार्य करने लगे। अन्ततः देवचंद जी ने राजा के यहाँ दीवान का कार्य प्रारम्भ किया। एक दिन मतू मेहता जी किसी काम से बाहर गये थे। राजा का सेवक बुलावा लेकर आया। देवचंद जी के भजन कीर्तन सुनकर हरकारा अर्थात् संदेशवाहक बहुत ही रस मग्न हुआ। उसने जाकर राजा को सब वृतांत कहा। तब राजा ने देवचंद्र जी से कहा कि आप हमें भी अलौकिक ज्ञान-कीर्तन सुनाकर आनन्दित कीजिए! जब देवचंद्र जी ने असमर्थता प्रकट की और कहा कि यह तो निर्मल मन की भक्ति से ही संभव है। भजन-कीर्तन परब्रह्म को रिझाने के लिये करते है। जब राजा ने दबाब बनाया तो आपने वह नौकरी छोड़ दी तथा व्याकुल हृदय से घर वापस गए। पिता मतू मेहता जी ने कहा कि जैसा तुम्हारा मन हो वैसा ही करो। आजीविका प्राप्त करने की चिन्ता छोड़ दो। तब देवचंद जी निश्चिंत होकर कान्हजी भट्ट से श्री भागवत ग्रंथ की चर्चा सुनने पहुँचे। वहीं पर गांगजी नाम के एक व्यापारी भी चर्चा सुनने पँहुचते थे। चौदह वर्ष तक निष्ठापूर्वक अर्थात एकाग्रचित्त होकर श्री मद्भगवद ग्रंथ की ज्ञान चर्चा सुनने के पश्चात् भी जब आत्म-जाग्रृति न हुई, तो परब्रह्म स्वामी ने कृपा की, और इनको अपने वास्तविक स्वरूप की पहचान कराने एवं इनको मार्ग दर्शन करने के लिये श्रीकृष्ण जी के स्वरूप में आकर पूछा कि हमें जानते हो? तब देवचंद्र जी ने कहा कि आप श्रीकृष्ण जी है। तब उन्होने पुनः कहा कि स्वंय को पहचानते हो? तब देवचंद्र जी ने उत्तर दिया कि मैं राधिका (राधा जी) हूँ। तब परब्रह्म ने उन्हे सत्यता का बोध कराया तथा तारतम ज्ञान के द्वारा परमधाम की महिमा

स्मरण कराई। एक चौपाई का तारतम (तारतम्य) दिया। यथा:-

**निजनाम श्री कृष्ण जी, अनादि अक्षरातीत।**
**सो तो अब ज़ाहेर भए, सब विध वतन सहित।।**

अर्थात- क्षर रूपी ब्रह्माण्ड परिवर्तनशील है। ब्रह्माण्ड में अतल, वितल, सुतल, महातल, रसातल, तलातल पाताल लोक एवं पृथ्वी, भुर्वलोक, स्वर्ग, मह जन, तप, सत आदि चौदह लोक पाँच तत्व (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु व आकाश) तीन गुण (सत, रज, तम) तथा मन, चित, बुद्धि व अहंकार गायत्री, सुमंगला शक्ति, निराकार, निरंजन, क्षर पुरूष आदि नारायण सचखण्ड बैकुण्ठ में है। अविनाशी अखण्ड अक्षर ब्रह्म से भी सर्वथा भिन्न, अनंत अखण्ड आन्नदमयी सच्चिदानंद परब्रह्म प्रियतम स्वामी अर्थात श्रीराजजी जी ही सबके स्वामी है। इन्होने पृथ्वी लोक में सर्वप्रथम ब्रज-मंडल के गोकुल में श्रीकृष्ण जी के स्वरूप में अवतरित होकर ब्रह्मांगना स्वरूप गोपियों के साथ आन्नद लीलाएं की। ग्यारह साल ब्रज में लीला की आनन्द एवं बावन दिन के वियोग के पश्चात अंर्तध्यान न हो गए। संसार के समस्त धर्मग्रंथो में इन श्रीकृष्ण जी को सोलह कला संपूर्ण परब्रह्म का स्वरूप माना जाता है। यह भेद ब्रह्मज्ञान रूपी तारतम्य से ही संज्ञान मे आता है। अन्य किसी भी मंत्र अथवा ज्ञान से यह भेद ज्ञात नही होते। तारतम्य ज्ञान के अवतरण की भविष्यवाणी इसीलिए ही लिखवाई थी:-

**यथा:- 'तारतम्येन जनाति सच्चिदानंद लक्षणम्'**

पुन: जब देवचंद जी को अपने मूल स्वरुप का

साक्षात्कार प्रियतम परब्रह्म स्वामी श्रीराज जी के रूप में कराया, तो मन के सभी संकल्प-विकल्प नष्ट हो गए तथा स्वयं के निजस्वरूप, युगल स्वरूप श्री श्याम-श्यामा जी का आत्म-साक्षात्कार हुआ। इसको नूर तारतम भी कहा गया है। इसका प्रमाण बड़ी अर्ज़ी में इस प्रकार से है कि **''रूहुल्लाह चौथे आसमान ( लाहूत, परमधाम ) से उतरे। रूहुल्लाह ने तीन दीदार देखे, प्रथम दीदार में पैग़ंबर साहिब ने नूर का पटुका ( कमर बंद ) बंधायो, दूसरे दीदार में अखण्ड बृज देखे, श्रीकृष्ण जी पिया संग मिले, तीसरे दीदार में बीच बेजा मुनारे के, नूर के कुब्बा में कलीज़ किल्ली''** (नूरी तारतम्य) दूसरी सूरत को दई।

जब इन्होने गांग जी भाई को यह दिव्य, अलौकिक ब्रह्मज्ञान कहा तो उन्होने भी प्रसन्नतापूर्वक अपना तन,मन,धन से आपको न्यौछावर करके साक्षात परब्रह्म का स्वरूप पहचान कर देवचंद जी की अत्यंत प्रेम-पूर्वक सेवा की। श्री मुखवाणी क़ुल्जुम स्वरुप साहिब में कई प्रकार से यह दिव्य अलौकिक ज्ञान कहा गया है। पारायण तो सभी करते है। किन्तु कोई विरला ही इस अनमोल ज्ञान को आत्मसात कर पाता है। क्योकि ज्यादातर सुदंर साथ जी की दृष्टि बाहरी कर्मकांड, वेषभूषा एवं पारायण-पाठ पर ही रहती है। यही इस खेल का भेद है। वास्तविक जागनी यह है। कि सभी को परमधाम के प्रियतम परब्रह्म स्वामी का साक्षात्कार हो। उनको ही जागृत समझना चाहिए। अन्यथा पूजा-पाठ एवं भजन-कीर्तन से तो केवल मानसिक तृप्ति होती है। अखण्ड अलौकिक परमधाम का साक्षात्कार कैसे होगा? श्रीमुखवाणी

में अलौकिक प्रेम, चितवन की महिमा का वर्णन किया गया है। यथा:

**यह लसकर सारा दिल का, सो दिलबरी सब चाहे।**
**दिल अपना दे उनका लीजिए, इन विध चरनों पोहोंचाए।।**

(किरंतन 98/13)

इस असत्य, जड़, मिथ्या ब्रह्माण्ड के अंदर परम-सत्य को परा ज्ञान कहा है। हमें असत्यता (झूठ) ज्यादा प्रिय है। असत्य माया के संसार में परम सत्य ब्रह्मवाणी ज्ञान की प्राप्ति किस प्रकार संभव है? कीकर का पौधा लगाने से आम का वृक्ष नही बन पाता, वैसे ही अठ्ठाईसवें कलियुग की अनहोनी घटना के रूप में यह ब्रह्मज्ञान का भेद कहा गया है। जागनी के ब्रह्माण्ड में इस दिव्य अलौकिक ज्ञान एंव परमधाम की लज्जत (आन्नद) देने के लिये सुंदरसाथ माया का खेल देखने जगत में आया है। तो केवल आवेश स्वरुप अर्थात सिर्फ सुरता के जरिये से अन्यथा हम तो परमधाम के मूल मिलावे में श्रीराजजी के चरणों मे विराजमान है। इस ब्रह्मज्ञान की महिमा अपरम्पार है। इसे यह मृत्युलोक रूपी मिथ्या संसार की जिहवा एवं कलम (लेखनी) वर्णन नही कर पाती है। परंतु सदगुरु की कृपा से ही यह थोड़ा सा वर्णन किया है। सीखने-सिखाने से ब्रह्मज्ञान रूपी वास्तविक तारतम्य (तारतम) ज्ञान नहीं आता। यह अनहोनी तो परब्रह्म स्वरूप सद्गुरु की मेहर (कृपा) से ही संभव है। जब सदगुरु ने सुंदरसाथ पर कृपा की, तो हम यह ज्ञान कह-सुन पाये। श्री जी प्रदत्त पवित्र ब्रह्मवाणी क़ुल्ज़म शरीफ या स्वरूप साहिब में परमधाम की ही महिमा कही गई है। जो

भी निर्मल चित्त होकर इस ब्रह्मवाणी के अनंत ब्रह्मज्ञान रूपी सागर में गोता लगाते है अर्थात् वाणी को आत्मसात कर लेते है, वही इसका भेद पा सकते है। उसी को इस ब्रह्मज्ञान की लज़्ात मिलती है। जैसे साधक त्रिधा मार्ग अर्थात पुष्टि, मर्यादा या प्रवाह से साधना मार्ग पर चलता है। कदाचित् परिणामतः कुछ शक्ति मिल जाए। तब सिद्धि तो मिलती है लेकिन ब्रह्मज्ञान नही मिलता यथा: **इलम दे चतुराई, दीवानगी देए मिलाए,।** जो कुछ सदगुरु की असीम कृपा से कहा है इसे ही गागर में सागर के समान समझें! क्योकि धाम धनी ने जितना बल सामर्थ्य दिया है, उतना ही कहा जाता है। जैसा श्री जी का हुक्म होता है वैसे ही समझ भी बन जाती है। **यथाः-**

**जाको लेत है मेहेर में, ताए पेहेले मेहेरें बनावे वजूद।**
**गुन अंग इंद्री मेहेर की, रूह मेहेर फूँकत माहें बूँद।।**

(सागर 15/14)

''अब एक सौ बीस वर्ष की जागनी लीला के अंर्तगत दूसरा तन अर्थात श्री मेहराज जी के ठक्कर जन्म व सद्गुरू श्री देवचंद जी से तारतम रूपी ब्रह्मज्ञान ग्रहण करके आत्म-जागृति करने का प्रसंग भी सुनिए। इससे कि सत्यता का प्रचार-प्रसार होगा। समस्त संसार में अद्वैत परब्रह्म के वास्तविक साक्षात्कार का सद्मार्ग प्रशस्त हो। अतः दो तनो के मिलन की बात भी संज्ञान में लीजिए क्योकि श्री देवचंद्र जी द्वारा 313 ब्रह्मात्माओं को ही जाग्रत किया गया।

## श्री मेहराज की जीवन लीला

पवित्रतम इक्ष्वाकु सूर्यवंशी, मर्यादा पुरुषोतम श्री

रामचन्द्र जी महाराज  के सुपुत्र लव के कुल (वंश) में एक क्षत्रिय ने स्वाध्याय से ब्रह्मविद्या का भेद जानकर अनेकों ब्राह्मणों को भी धर्म शास्त्रों का ज्ञान दिया। जब एक बार नगर में राजा जयचंद्र के यहां विवाह का आंनद-कारज उत्सव के कार्य का संयोग बन गया। तब राजा ने विद्वान ब्राहाण की खोज करवाई लेकिन कोई भी ब्राह्मण राजा के यहाँ पर आन्नद उत्सव में पधार कर दान-दक्षिणा लेने को अग्रसर अथवा इच्छुक न हुआ तो वह व्यथित राजा उस ब्रह्मज्ञानी क्षत्रिय के पास आया उसने कहा कि हे महाराज! इस समय नगर में आप ही ज्ञानवान पुरुष है। अतः हमारे राजभवन में पाणिग्रहण (आन्नद मंगल) के उत्सव में पधार कर शुभ-विवाह के मांगलिक कार्य को पूर्ण करे। तब क्षत्रिय ने यह कहा कि राजन्! यह तो हमारा कर्म नही है। यह तो ब्राह्मणों का कर्म है। तब राजा ने अत्यंत क्रोधित होकर उसको अपने देश से निकाल दिया। तदुंपरात उस ब्रह्मज्ञानी क्षत्रिय वीर द्वारा निर्जन देवीथल नामक स्थान में घोर साधना की तथा अनेक कष्टों को सहते हुऐ, परमात्मा से मनोवांछित वरदान प्राप्त किया। तत्पश्चात कालन्तर आपके पूर्वज कन्नौज के राजा जयचंद्र के अधीन जोधपुर नामक स्थान पर निवास करते थे। जहां पर वह राठौर क्षत्रिय के अंर्तगत चौरासी गाँव के जागीरदार थे। राजा से वैचारिक मतभेद के कारण गुजरात-सिंध के लौहगढ़ मे निवास करने लगे। इसीलिये इनको लोहाणा ठक्कर क्षत्रिय कहा गया।

सूर्यवंश विच रघु कहयो रामचंद्र सुत जौन।
लव वंशीय क्षत्रिय प्रबल द्वादस भाई तौन।।

द्विपद राय जयचंद के सबको कन वज वास।
करयो यज्ञ नृप ता समय ब्राह्मण मिले ख़ास।।
द्वादस भाईन सो कही तुम विद्या बल धीर।।
हमको यज्ञ कराइयो लेहू ब्रह्मपद धीर।।
उन मान्यों नही ता समय, कोप नृपति अति कीन्ह।
जाऊँ हमारे देश ते, तुंरत निकारी दीन्ह।।
गयो दिशा पश्चिम विषे, मिलि नवभ्रात निधात।
क्षत्रिय वंश प्रकट भयो फैलयो बहु कुल जात।।
द्वादस माहि एक को भयो प्रबल अति वंश।।
असि की सिद्धि पूरण उन्हे दयो शारदा अंश।।
खड़ग बाहु दिन अपनी लयो लौहगढ़ जौन।
ताये उनके वंश को कहया लौहाणा तौन।।

(वृजभूषण कृत मेहराज चरित प्र० 32)

संयोगवश प्रसिद्ध राजा चंद्रगुप्त विक्रमादित्य की रानी चन्द्रप्रभा जो शहीद-ए-आज़म इमाम हुसैन अलै० की धर्मपत्नि शहरबानों की बहन महपारा या महरबानों की परंपरा में से है। क्योंकि पैंग़बर मुहम्मद सल्ल० का कथन है कि ''आख़रूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज़्ज़माँ हसन-हुसैनी वंश रिश्तेदारी में ही होगा।''

प्रसंग यह है कि फ़ारस (ईरान) का बादशाह शाह जमरूद पारसी (अग्नि पूजक) था जिसकी तीन पुत्रिया थीं। एक पुत्री मेहरबानू महपारा (चंद्रप्रभा) की शादी उज्जैन के राजा चंद्रगुप्त विक्रमादित्य से हुई। अरबो द्वारा फारस (आधुनिक ईरान) के विजय के पश्चात दूसरी लड़की शहरबानू की शादी परम्परानुसार इमाम हुसैन अलै० के

साथ हुई। पूर्व में तीसरी लड़की केसरबानू की शादी रोम के शहंशाह से हुई। अतः तीनों बहनों के सबंधों से उनके नाती-रिश्ते से सबंधित सभी आपस में रिश्तेदार बन गये।
हिंदू मान्यता अनुसार भी

**''देवापिः सन्तनोर्भ्राता, मरूश्चेक्ष्वाकुवंशजः।**
**कलाप ग्राम आसाते, महायोग बलान्वितौ।।''**

अर्थात देवापि एवं शान्तनु नामक भाइयों को परब्रह्म के कलियुग में अवतरित होने का ज्ञान प्राप्त होने पर दोनों ने घोर साधना की तथा परमात्मा से प्रार्थना की हमें वरदान दीजिए कि कलियुग में होने वाले अवतार हमारे तन को ही धारण करें। तब उन्होने 'तथास्तु'! कहा।

अतः उपयुक्त वर्णित दोनों वैदिक व कतेब पक्ष की परंपरा अनुसार पवित्र लोहाणा ठाकर (कुछ ठक्कर गुजराती क्षत्रिय एवं ठक्कुर गुजराती ब्राह्मण खोजा, बोहरा सतपथी भी कहलाते है। इस मत का उद्‌गम पीर सदरूद्दीन द्वारा सिंध-गुजरात में किया गया। इनको इस्माईली शिया इमामी भी कहा जाता है। मूलतः यह व्यवसायी समुदाय है। अतः कट्‌टर सुन्नी मुस्लिम इनको बहिस्कृत करते है। यह प्रणामी मत के समानार्थी है। परन्तु निजानंद/प्रणामी एक भिन्न समुदाय है। इन दोनों का उद्‌गम स्थल समान होने से भ्रमवश इनको एक ही समझा जाता है। इस्माईली खोजा शिया पंथ भी उदार है। परन्तु प्रणामी मत अत्यंत ही उदार है।) कुल मे श्री मेहराज जी इस अठ्ठाईसवें कलियुग में प्रकट हुए। इन्होने संसार को भवसागर से गोपद के समान सुगमता पूर्वक पार उतरने का सहज मार्ग भी बताया।

शास्त्रो के वचनानुसार पवित्र लोहाणा ठक्कर परिवार में श्री मेहराज जी ने भी पिता केशव ठाकर जी तथा माता धनबाई जी के यहाँ पर अवतार का तन संवत सौलह सौ पिच्हत्तर (1675) सन 1618 ईस्वी हिजरी 11वीं सदी जामनगर राज्य (गुजरात) में धारण किया। जब बारह (12) वर्ष की आपकी उम्र हुई, तो इनकी निजानंद स्वामी श्री देवचंद्र जी से मुलाकात हुई। सद्गुरु के मिलन से जागृत बुद्ध ह्रदय में प्रवेश हुई तथा परमधाम का तारतम ज्ञान प्राप्त किया। **यथाः-**

**''तारतम्येन जनाति् सच्चिदानंद लक्षणम्''** (उपनिषद)

आपको देवचंद जी ने एकांत में धर्मग्रंथों के सब भेद समझाये तथा कहा कि आपके तन पर ही जागनी का भार है, तथा दो प्रमुख सरदार (सखियां शाकुंड़ल एवं शाकुमार राजधरानों में उतरी है। उनको ढूँढ़ कर सावचेत (जाग्रत) करना है। जब ये दोनों सरदार सुंदरसाथ जागृत हो जाऐगें, तो छत्तीस हज़ार सखियों के साथ जागनी रास की लीला सम्पन्न होगी। यथाः-

**साथ सुनो एक वचन, आवे बाई साकुंडल साकुमार,**
**रास खेल घर चलसी, भेले इन भरतार।।**

(किरंतन 55/26)

**खेले मिल के रास जागनी, भेले इहां से चौबीस हजार।**
**करसी लीला बरस दस तोड़ी, हांस बिलास आन्नद अपार।।**

(किरंतन 54/14)

तत्पश्चात् सभी सखिया अपने निजधाम को पहुँचेगी तथा दुनिया की जागनी लीला अखण्ड हो जायेगी। तारतम्य ज्ञान रूपी इल्म-ए-लदुन्नी की कुंजी अर्थात भेद तुम्हारे हाथ में है तथा परमधाम के कुल (समस्त) भेद भी तुम्हारे हाथ से जाहिर (प्रकट) होगे। कुछ अंतराल अर्थात डेढ़ सौ (150) वर्षो तक यह अलौकिक ब्रह्मज्ञान लुप्त (अदृश्य) रहेगा। फिर पुनः डेढ़ सौ वर्ष के पश्चात् यह ब्रह्मज्ञान संसार में प्रकट होना प्रारंभ होगा एवं चारों ओर फैल जाऐगा। तब समस्त मानव एक होकर इस अनुपम ब्रह्मलीला का रसपान करेंगे।

तत्पश्चात श्रीराजजी ने मेहराज जी के दिल में यह सद्गुरू उपजाया कि सद्गुरू देवचंद्र जी तो परमधाम का दर्शन सदैव करते हैं। मैं प्रियतम के परमधाम का दर्शन क्यों नही कर पाता हूँ। अवश्य मेरे में ही कोई अवगुण है जिसके कारण मुझको परमधाम का दर्शन नही होता है। इसलिये वैराग्य धारण कर तन को कई कष्ट दिये तथा कसनी की एवं कहा! कि मेरे धनी! मैं क्यो नही परमधाम का दर्शन कर पाता हूँ? तब श्रीराजजी ने संकेत दिया कि राजजी की शक्ति एक समय में एक तन मे ही लीला करती है तथा देवचंद्र जी के बाद आपके तन से ही जागनी लीला होगी। तत्पश्चात् व्यस्तता हेतु देवचंद्र जी ने मेहराज जी को पहले दो ग्रंथ लाने हेतु अहमदाबाद भेजा। वहाँ से आने पर अरब भेजा जहाँ पर गाँगजी के भाई खेता जी व्यापार करते थे। इस प्रकार श्रीजी पाँच सात वर्ष अरब में रहे। अचानक खेता भाई के देहान्त के पश्चात अरबी शेख़ सालेह द्वारा समस्त

सम्पत्ति पर अधिकार कर लिया गया, तो श्रीराजजी द्वारा अरब की वेशभूषा में श्रीजी को दिशा निर्देश दिया कि खलीफ़ा से दामन पकड़ कर रोज-ए-महशर की फरियाद करो। तब वैसा ही करने पर उनको न्याय मिला। वह शेष सम्पत्ति लेकर वापस लौटे तो देवचंद्र जी ने उनका प्रणाम भी स्वीकार न ही किया। क्योंकि देवचंद्र जी के परिवार में उनके प्रति ईर्ष्या थी। तब वह खिन्न होकर राजा के दीवान का कार्य करने लगे। सदगुरू श्री निजानंद स्वामी (देवचंद जी) के सुपुत्र बिहारी जी भी अरब आ पहुँचे। और उन्होने वहां से वापस भारत लौट कर राजा से झूठी चुगली कर दी। जिसके परिणाम स्वरूप जाम नगर के महाराज ने आपको नजरबंद करवा दिया। लेकिन कचहरी में आप निर्दोष साबित होए। और ससम्मान बरी हो गये।

राजा ने उन्हे झूठे आरोप से आज़ाद कर दिया और क्षमा-याचना माँग कर इन्हे सिरोपा एवं एक जागीर अर्थात जूनागढ़ गाँव उपहार में दिया। तत्पश्चात सद्गुरू के धाम गमन के पश्चात आपने पुनः देश-विदेश में प्रचार-प्रसार का कार्य त्रीवता से किया। जिससे कि समस्त जन-साधारण में नवचेतना का संचार हो सके। श्री जी अपने साथियों के साथ जगह-जगह जागनी का कार्य करते हुए देश के पश्चिमी भाग में स्थित गोवा, दमन, दीव समूह, गुजरात, महाराष्ट्र, सिंध, कराची इत्यादि, विदेशों में बन्दर अब्बास (ईरान), मस्कट वन्दर, बगदाद, बसरा (ईराक) इत्यादि देशों में यात्राए की।

कुछ समय पश्चात् पुनः जब कसनी के दौरान सिर्फ नाममात्र

के भोजन पर आ गये एवं श्वांस भी रूकने लगी, तो श्रीराजजी ने निर्मलता देख कर साक्षात दर्शन दिया। तब मन के सारे भेद खुल गए। तथा निजआंनद रूपी पहचान की दिव्य सुगंधि आई और लगा कि हम मूलतः परमधाम में ही बैठे है एवं धाम-धनी द्वारा प्रायोजित इच्छा स्वरूप संसारिक छल प्रपंच से भ्रमित होकर इश्क़ आंनद की मस्ती में हमने माया (संसारिक खेल) माँगकर असत्य माया को सत्य जानकर धोखा खाया हुआ है यही वह भेद है। जिसमें सारा जीवन व्यर्थ चला जाता है, मानव सारी उम्र झूठी माया (संसारिकता) इकट्ठे करते रहते है। सच्चे अध्यात्मिक सुख निजानंद से जुदा (भिन्न) रहते है। श्रीजी ने तो अपना सर्वस्त अर्थात् सब कुछ हँसते-हँसते न्यौछावर कर दिया। तथा अखंड ब्रह्मज्ञान का अलौकिक ख़जाना प्राप्त किया। जिस प्रकार मार्कण्ड ऋषि को परमात्मा ने माया दिखाई तथा चरणों से दूर भी नही किया उसी प्रकार वास्तव में हम परमधाम में श्रीराजजी के चरणों में बैठकर माया का खेल मिथ्या तनों पर सुरता के द्वारा देख रहे है। हमारे नूरी दिव्य आलौकिक तन मिथ्या जगत (संसार) में नही आ सकते है। यथा:-

**'कंकरी एक अर्स की उड़ावे चौदह तबक़'**

इसी प्रकार परमधाम से न कोई नूरी तन यहाँ आया है और न कोई पंच भौतिक तन वहाँ गया है। अर्थात यह माया प्रपंच स्वप्न मात्र है। यह सारे भेद तारतम्य रूपी ब्रह्मज्ञान द्वारा ही ज़ाहिर (प्रकट) होते है। जब परमधाम के मूल स्वरूप की पहचान होती है, तब हमें अपने मूल

स्वरूप को चितवन द्वारा एकाग्रचित्त होकर देखना चाहिए। इससे परमधाम के भेद अर्थात अक्षर ब्रह्म की बाल लीला तथा परब्रह्म अक्षरातीत की चेतन लीला एवं आनंद अंग का अलौकिक प्रेम के भेद ज़ाहिर होते है। माया संसार और काल से भिन्न जो चेतन किशोर स्वरुप है, उसके अनेकों रूप परमधाम में विराजित है। यथा:-

**जो प्रदक्षिना निजधाम की, सातों स्वरूप श्रीराज।**
**सो सारे परना मिने, वास्ते सैंयन के सुख काज।।**

(बीतक साहिब प्र० 17/66)

दिव्य अलौकिक अखंड परमधाम में सत की चेतन व आनंद की अद्धैत लीला है। वहाँ अक्षर ब्रह्म एवं अक्षरातीत पूर्णब्रह्म की ही भिन्न-भिन्न लीलाएँ है, लेकिन अक्षर ब्रह्म का वह स्वरूप भी परमधाम की आनंद लीला में प्रवेश नही कर पाता। इसके भेद केवल वेद पक्ष (सनातन हिंदु दर्शन) एवं कतेब पक्ष (पश्चिमी मुस्लिम दर्शन) से एवं सिर्फ़ अकेले तारतम्य ज्ञान से यह भेद नहीं जाना जा सकता है, बल्कि दोनों पक्षों के पवित्र ग्रंथों के परस्पर मिलान द्धारा ही यह ब्रह्मज्ञान (इल्म-ए-लदुन्नी) का भेद जाहेर (प्रकट) हो पाता है। **यथा:-**

**जो कछू कहा वेद ने, सोई कहा कतेब।**
**दोऊ बंदे एक साहिब के, लडत बिन पाए भेद।।**

अब पुन: श्री मेहराज जी के जीवन चरित्र को, सागर की
एक बूंद रूप में वर्णन करते है। जब श्री मेहराज जी को आत्म जागृति हुई तथा उन्होंने अपने पंच भौतिक तन को भी

रहनी द्धारा निर्मल कर लिया अर्थात माया की तरफ से ध्यान हटाकर श्री राजजी की तरफ मोड़ लिया। कुछ समय पश्चात जब सदगुरू श्री देवचंद्र जी के धाम पहुँचने का समय निकट आ पहुँचा, तो उन्होंने मेहराज जी को अपने पास बुलाकर परमधाम के समस्त भेद समझाए तथा भविष्य की सारी जागनी लीला के भेद कहे। दो सिरदार (प्रमुख) सखी शाकुंडल-शाकुमार के राजघराने में अवतरित होने एवं उनके जागृत होने की महिमा भी बताई तथा कहा! कि आपके तन से ही विजयाभिनंद बुद्ध निष्कलंक अंतिम अवतार या आख़रूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज़्ज़मां रूहुल्लाह के ज़ाहेर होने की लीला होगी।

अंतत: विक्रमी सवंत सत्रह सौ बारह (1712-सन 1769 ईस्वी) में भादों माह के शुक्ल पक्ष में चौदस (14) को श्री देवचंद जी अंर्तधान हुये। तब सुंदरसाथ ने सलाह (विचार) करके श्री देवचंद्र जी के सुपुत्र बिहारी जी को सद्गुरु की गद्दी पर बिठाया। परन्तु जब एक बार एक निर्धन साथी ने श्री बिहारी जी से विनती की कि मेरा गाँव तीन कोस की दूरी पर है। और मैं आपके दर्शन करने को एक बार आना चाहता हूँ। यदि आप मुझे आज्ञा दें तो आपका मुझ पर बहुत उपकार होगा। तब बिहारी जी ने गुस्से (क्रोध) से भरकर कहा कि आज से तुम हमारी मज़लिस (धर्म गोष्ठी) में न आना। कुछ स्वयंभू प्रचारक श्री बिहारीजी की ही भाँति दिशा-निर्देश देते है।

**''अंदर मैले बाहर उजले यह जीव सृष्ट की रीत''**

अब सद्गुरु श्रीराजश्यामाजी स्वरूप साक्षात मेहराज जी के

धाम हृदय में विराजमान हैं। वह ग़रीब तीन दिन तक बिहारी जी के द्वार पर भूखा प्यासा पड़ा रहा। तब श्री मेहराजजी की धर्मपत्नी फूलबाई जी द्वारा उसको समझा-बुझा कर भोजन करा दिया गया। बिहारीजी को यह पता चला तो वह बहुत गुस्सा (क्रोधित) हुए तथा मेहराजजी को अपनी सेवा में बुलवाया तथा उन पर भी क्रोध किया। मेहराजजी ने नम्रता से कहा कि हे धाम-धनी! मेरा कसूर क्या है? तो बिहारी जी ने सारा सारा वाक्या (प्रकरण) कह सुनाया। यथा:-

**''कहे महामत परीछा तिनकी, जो पेहेले हुए निरमल''**

(किरंतन 90/16)

श्री मेहराज जी ने विचारा कि अवश्य ही मेरी मायावी परीक्षा का समय आ पहुँचा है। अत: जब बिहारी जी ने उन्हे कहा कि धर्मपत्नी या धाम-धनी में से एक को रखो, तो श्री मेहराजजी ने कहा कि मैं अपनी धर्म-पत्नि का त्याग करता हूँ। कुछ अंतराल के बाद बिहारीजी से जागनी अभियान लीला रूपी धर्म यात्रा के प्रचार-प्रसार में मतभेद होने से श्रीजी ने स्वयं जन जागरण यात्रा प्रारम्भ की तथा फूलबाई जी ने भी शरीर छोड़कर नया तन तेजबाई जी का धारण किया जो कि अमलावती की वासना है। तत्पश्चात् संयोग से पुनर्मिलन होने पर श्री मेहराज जी ने तेजकुँवरी जी से दूसरा विवाह किया।

श्री मेहराज जी ने जब दीप बंदर की धर्म जागनी यात्रा की, तो वहाँ पर श्री जयराम भाई कंसारा नाम के एक

सुंदरसाथ को पुनः जागृत किया। वह श्री देवचद्र जी से तारतम लेकर भी माया में मगन (लिप्त) हो गया था। वहाँ पर जो किरंतन उतरे वह रास ग्रंथ के शुरू में दिये गये हैं। जिस में जयराम नाम के एक सुंदरसाथ को खंडनी के कठोर वचन कहकर झकझोर दिया गया है। दूसरे सुंदर साथ जी को भी प्रबोध है। जिससे वह भी माया जाल के प्रपंच बंधन में न उलझें।

श्री जी दो (2) वर्ष के बाद फिर ठठ्ठा नगर (करांची) पहुँचे तथा जागनी लीला में सहयात्री लक्ष्मण सेठ (लालदास) जी को जागृत किया। इस समय तक हजारों सुंदरसाथ जाग्रत व एकत्र हो गये। आठ (8) माह पश्चात आप साथियों सहित पुनः मस्कत बंदर (इराक़, अरब) पहुँचे तथा सुंदरसाथ को जगाया। फिर अब्बासी बंदर (ईरान) में भैरो सेठ को जागृत किया। उन्हें परहेज करने हेतु कहा (माँस-मदिरा त्याग) तथा उनको तीन दिन में उन्हें परमधाम का चितवन ध्यान द्वारा साक्षात दर्शन कराया। वापसी पर जब नलिया नामक जगह पर बिहारी जी से मिलन हो गया। तब मेहराज जी ने उनको भेंट स्वरुप बहुत सी वस्तुएं, रुपया, आभूषण इत्यादि दिया। आपने विनती की कि देवचंद जी प्रदत्त आत्म जागृति के अलौकिक संदेश रूपी तारतम ज्ञान का सभी को सुगमता से बोध कराऐं और धाम-धनी के दिग्दर्शन रूपी जागनी यात्रा में सहभागी बनें। लेकिन बिहारी जी ने इंकार कर दिया। तब सुंदरसाथ एवं श्री मेहराज जी ने एकत्रित होकर सूरत के सैयदवाडे में ताप्ती नदी के तट पर धर्म जागनी पीठ की स्थापना की। अंततः सुंदरसाथ ने उन्हें

''**प्राणनाथ**'' (प्राणों के स्वामी) कहकर संबोधित किया। वहाँ पर दिन-रात अद्वैत ब्रह्मविषयक चर्चा होने लगी तथा वेदान्ती भीम भाई, श्यामजी को आत्म-जागृति हुई। तब उन्होंने अपने ज्ञान के अहंकार को छोड़कर श्रीजी के स्वरूप को पहचान कर सर्वस्व समर्पण कर दिया। सभी साथियों ने एक मत से बिहारी जी के बनाए चौदह परहेज़ (नियम-संयम) त्याग दिए। यथा:-

1. बिहारी जी को धाम-धनी (स्वामी) मानना
2. बिहारी जी को भौतिक भेंट सेवा प्रदान करना
3. बिहारी जी का प्रत्येक हुक्म (आदेश) पालन करना
4. सद्गुरु महाराज जी की गादी की श्रेठता मानना
5. सुगन्धित पदार्थों को कदापि न लगाना
6. दूध-घी को ग्रहण न करना, रूखा-सूखा भोजन करना
7. पान बीड़ा इत्यादि न खाना
8. गर्म (उष्ण) जल से स्नान न करना
9. पलंग की सुख सेज्या (शैय्या) पर न सोना
10. सुंदर वस्त्र धारण न करना
11. स्वर्ण आभूषण न पहनना
12. राग-रंग, गीत-संगीत न सुनना
13. स्त्री तन का स्पर्श न करना
14. सुंदर नर-नारी को न देखना

अब इसके बाद श्रीजी मेड़ता (राजस्थान) नगर में आये। एक दिन नगर में भ्रमण के दौरान उन्होंने मस्जिद की मेहराब से अजान सुनाई दी। मुअज़्ज़िन मधुरता से कल्म:-ए-तय्यब: कह रहा है। वहाँ मेड़ता की मरुभूमि में उस

सफ़ेद मीनार पर ईसा रूहुल्लाह का ज़हूर हुआ। अर्थात् वेद-कतेब पक्ष का मिलान करने हेतू तारतम ज्ञान का भेद अंतस्करण में प्रकट हो गया। यथाः-

**''अश्हदु अल-ला-इलाह-इल्लल्लाह''**
**अश्हदु अन्ना मुहम्मदुर्रसूलल्लाहू**
**सल्लल्लाहु आलैहि व सल्लम**

अर्थात क्षर रूपी नष्ट होने वाले ब्रह्माण्ड से भिन्न अखण्ड अक्षर ब्रह्म का बह्माण्ड है। उससे भी भिन्न परब्रह्म के संदेश वाहक के रूप में प्रंशसित मुहम्मद साहिब पृथ्वी पर अवतरित हुए हैं।

**व्याख्याः**- ला (क्षर) नही में नासूत में चौदह तबक (लोक) आसमान से जुदा चार अनासिर (तत्व), तीन अख्लाक (गुण), आठ जिन्स (धातु), सात सुर शून्य(सुंन), मलकूत (बैकुंठ), तारीक ज़ुलमत (अंधकार), सुरैय्या (ज्योति स्वरूप) तक मृत्युलोक है। इससे भिन्न ''इलाह'' जबरूत कायम (अखण्ड) है जो कि फरिश्तों जबराईल (शक्ति)अस्राफ़ील (बुद्धि) का मकाम (स्थान) है। इससे परे लाहूत (परम धाम) है जहाँ पर अल्लाह तआला का नूरी हाहूत (धाम) है। यहां पर ही अपने महबूब मुहम्मद (प्रशंसित)को बुलाकर कलाम-ए-रब्बानी के रमूज़ (भेद) उनको बयान (बर्णन) किए एवं (संसार) के लिए आख़रूल पैग़बंर-रहमत उल-आलमीन (संसार का मोक्ष प्रदाता) बनाकर भेज कर दुनिया को अद्वैत परब्रह्म के तौहीद अर्थात एकेश्वरवाद का संदेश दिया।

इसी नगर में राजाराम जी झांझन भाई भंडारी को

आत्म जागृति प्रदान की, जिनकी सेवा की शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता। मेड़ता से पन्ना तक पाँच हजार (5000) सुंदर साथ की कुल सेवा राजाराम-झांझन भाई जी ने श्रीजी की शक्ति से निभाई है। आज तक इनके वंशज धामी भाई के रूप में सुंदरसाथ को प्रबोध प्रदान करके धन्य-धन्य हो रहे हैं। यथा:-

**''तुम प्रेम सेवाएँ पाओगे पार''**

राजाराम झांझन भाई ने अपने कारखानों की चाबियां श्रीजी के चरणों में सौप दी थीं, तब श्रीजी ने वह चाबियां वापस उन्हे लौटाकर राज जी की सेवा के लिये कहा, तो उसके एक से सौ कारखाने हो गये। जबकि लक्ष्मण सेठ जी द्वारा श्री जी का जागनी अभियान में सहभागी बनने के निर्देश का पालन न करने के कारण उनके कुल निन्यानवे (99) जहाज डूब गये थे। श्रीजी से मिलन के समय केवल एक हाथ में लोटा ही शेष रह गया यथा:-

**''रब देता है तो छप्पर फाड़ के देता है**
**जब लेता है तो घुटने तोड़ के लेता है।''**

अत: इन्होने साथियों से मुग़ल बादशाह आलमगीर औरंगजेब से मुलाकात कर उसकी आत्म जागृति का काम करने का निश्चय किया।

दिल्ली में आने पर साथियों ने बहुत प्रयास किया कि बादशाह से मुलाकात हो। लेकिन दरबारियों की वजह से मुलाकात न हो पाई। तब श्री जी अनूप शहर पहुँचे जहाँ पर सनद (सनंध) ग्रन्थ उतरा, फिर आपने अपने साथियों को दिल्ली भेजा तब शेख बदल, क़ायमुल्ला, लाल दास आदि

12 खासुलखास मोमिनों ने जामा मस्जिद दिल्ली की सीढ़ियों पर सनद (सनंध वाणी) का गायन किया। यथा:-

**कलाम अरबी हक़ रसूल ना फाल कसीदे कलम।**
**लाकिन माय आरिफों मिन्हों हिन्द-मुस्लिम**
**अस्मा हिंद मुस्लिम अनी कलम सिदक**
**मा कलम अनी किजबो मातुम कुम कलमा हक़।।**

जब मस्जिद के मौलवी द्वारा सनद (सनंध) कलाम को सुना तो वह बहुत खुश हुआ और उसने मोमिनों को बुलाकर पूछा कि आप क्या चाहते हो?

मोमिनों ने बादशाह मुहीउद्दीन औंरगज़ेब रह० से मुलाकात की बात कही, तो वह उन्हे लाल किला में दिवाने-ए-आम-व-खास में बादशाह के पास ले गया। लेकिन उलमा व दरबारियों द्वारा बादशाह को सन्देह में डाल देने की वज्ह (कारण) से एकांत में बातचीत संभव न हो पाई।

तब बादशाह के हुक्म से दारोगा सिद्दीक़ फौलाद के पास मोमिनों को भेजा गया जहाँ पर उन्हे नज़रबंद किया गया। और उन्होने कई कसाले सहे। लेकिन अन्त में उनका ईमान-इश्क़ देखकर अत्याचारी अन्यायी दारोगा तंग होकर खुद शर्मसार हो गया। तत्पश्चात् बादशाह के हुक्म से उन्हे हवेली में ठहराया गया। जहाँ पर मोमिनों ने प्रमुख क़ाज़ी शेख़-उल-इस्लाम से बातचीत की तो मोमिनों ने काज़ी से पूछा कि हमें किस जुर्म में नज़रबंद किया गया है? क्या क़ुरान पाक और दीन-ए-इस्लाम में मुहम्मद साहिब की प्रशंसा की बात करना गुनाह है?

तब क़ाज़ी भी बहुत शर्मसार हुआ और मुआफी

(क्षमा) माँग कर उसने कहा! कि कहिए आप हमसे क्या चाहते हो? तो मोमिनों ने हक़ीक़ी दीन इस्लाम की बातें की। तब मोमिनों ने क़ाज़ी साहब से सवाल पूछे कि–

1. कल के दिन अर्थात क़ियामत का क्या मायना है?
2. शब–ए–क़द्र क्या है?
3. हज़ार महीने की बेहतर रात कौन सी है?
4. क़ियामत सुग़रा–कुबरा का जाहेर होना क्या है?
5. दाब तुल मिनल अर्ज़ का ज़ाहिर होना कहा पर है?
6. आज़ूज माजूज कहा ज़ाहिर होंगे?
7. सूरज का मग़रिब (पश्चिम) से तुलुः (उदय) होना कैसे है?
8. क़ुरान पाक व शफ़कत बरकत का उठना क्या है?
9. तौबा का दरवाज़ा कब बंद होना है?
10. दीन–ए–इस्लाम का ताज़ा होना क्या है?
11. दज्ज़ाल का निकलना कहा पर है?
12. पिछली किताबे मन्सूख़ करके उन्ही नामों की नई किताबे कौन सी है?
13. पिछली आयतें–सूरतें भुलाकर नई बेहतर लाने का जो बयान क़ुरान पाक में है। तो वह कहा है?
14. हज़रत ईसा रूहल्लाहु व आख़रूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमाँ का प्रकट होना कहा पर है?
15. हज़रत इमाम महदी व ईसा अलैहिस्सलाम में कौन किसका अनुयायी है?
16. दीन की पातशाही हज़रत अली वलीउल्लाह (छत्ता) को दी गई है तो उनकी इमामत से इंकार क्यो है?

17. आलिमों की दुश्मनी इमाम महदी साहिब से क्यों कही है?
18. यहूदियों के गिरोह को आख़िरत में पैंग़बरों का मुल्क कहा है। तो वह यहूद कौन है?
19. आख़िरत के वक़्त मोमिनों व दुनिया को क्या -2 फायदा मिलेगा?
20. सूरः क़द्र में बयान रूहें व फरिश्तें कौन से है?
21. हरूफ़-ए-मुक़्तआत, मुतसहाबा और मुहुक्म क्या है?
22. हादी-उल-दारैन इल्म-ए-लद्दुन्नी क्या है?

लेकिन क़ाज़ी व उलमा-ए-दीन एक भी सवाल (प्रश्न) का जवाब (उत्तर) सही-सही न दे पाए और अटकल लगाकर कहने लगे। तो मोमिनों ने सब बातों के सही मायने क़ुरान पाक से तशदीक करके बताया कि दसवीं व ग्यारहवीं हिजरी सदी में हज़रत ईसा रुहुल्लाह आख़रूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज़्ज़माँ का ज़हूर हिंदुस्तान में हो चुका है।

अतः आप उन्हे पहचानिये और उन पर ईमान लाईये। तभी आख़रूल इमाम अल मुंतज़र साहिबुज्जमाँ के ज़हूर के बारे में वसीयतनामा मस्जिद-ए-नबवी से आया और हुक्म हक़ तआला और ख़ात्मुल नबी सल्ल० का हुआ कि इमाम साहिबुज़्ज़माँ की पैरवी करो। **''हाजा महदी खलीफतुल्लाहुवसी व इशाओ''**

लेकिन उन्होने इन वसीयतनामों के हुक्म को न माना। क्योंकि इमाम साहिबुज़्ज़माँ ने इस्लाम में तसव्वुफ (अध्यात्म) के तरीके (रास्ते) को अपनाया और शरीअत, तरीकत,

मारिफ़त व हक़ीक़त का इल्म-ए-लदुन्नी की बाते बताई और लोगों से मारिफत व हक़ीक़त के रास्ते पर चलने की हिदायत (निर्देश) दी।

लेकिन हुकुमत-ए-हिंद (मुग़ुल शासको) आख़रूल इमाम साहिबुज़्ज़माँ के खिलाफ़ (विरूद्ध) रहे, क्योकि कदीम (पुराने) समय से ही हुकुमत व तसव्वुफ़ में दुशमनी सी रही है। मासूम इमाम और बड़े-बड़े सूफी व औलियाल्लाह ने शहादत (बलिदान) देकर भी तसव्वुफ व इश्क-ए-हक़ीक़ो को जिन्दा रखा। जैसे कि हज़रत इमाम अली, इमाम हुसैन, मंसूर, शेख सरमद शहीद, इत्यादि। इसलिए एक बार फिर हुकुमत व तसव्वुफ के इश्क में दुश्मनी व जंग (संघर्ष) लग गई। परिणामतः मुग़ुल हुकुमत का हिंद से खात्मा (समाप्त) हो गया। और हिंदुस्तान में इमाम सरदार महमत साहिबुज्जमाँ, श्री जी साहिब प्राणनाथ जी का तसव्वुफ इश्क-ए-हक़ीक़ी बढ़ता ही जा रही है।

इसके बाद श्रीजी दिल्ली आये तथा हिंदुस्तान के मुग़ल बादशाह मोहिउद्दीन औरंगज़ेब आलमगीर को हक़ की खिलाफ़त इमामत व क़ियामत अर्थात आख़रूल इमाम साहिबुज़्ज़माँ का पैग़ाम (संदेश) दिया यथाः-**( 1 ) सोई ख़ुदा, सोई ब्रह्म ( 2 )प्रेम ब्रह्म दोऊ एक ( 3 )जो कह्या वेद ने सोई कह्या कतेब ( 4 )साहिब सबका एक ( 5 )सुख शीतल करूँ संसार ( 6 ) प्रेम सेवा से पहुँचे पार ( 7 )एक ख़सम एक दुनिया ( 8 )एक जात सबन की ( 9 ) जागो और जगाओ ( 10 ) सबसे सुगम बोली हिंदुस्तानी ( 11 ) पार पुरूख पिया एक ( 12 ) हद-बेहद पार वतन ( 13 ) इश्क**

**मिलाए हक़ ( 14 ) शब-ए-मेराज ज़ाहिर करी।** लेकिन शरा-तोरा के शासन में भौतिकवाद एवं कर्मकांड का ज़ोर होने से वह जागृत नहीं हो सका। तब मक्क़ा मदीना की मस्जिद नबवी रोज़ा ए-मुबारिक से क्रमशः दसवीं-ग्यारवीं हिज़री में चार वसीयतनामः आये, जिनमें वहां के खादिमों (सेवकों) ने कसम (सौगंध) खाकर कहा कि हमें! ''गैब से आवाज़ (आकाशवाणी) आई है। कि मश्रिक़ (पूर्व हिंद) में हज़रत ईसा रूहुल्लाह और आख़रूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमाँ के रूप में ज़ाहेर हुऐ हैं।'' उनका इस्मे-मुबारिक (पवित्र नाम) फ़क़ीर सय्यिद मुहम्मद इब्न-ए-इस्लाम लक़ब (उपाधि) महमत (भौतिक तन मेराज) है जो कि मग़रिब (पश्चिम) हिंद में सूरज निकलने का एक निशान है लेकिन मुस्लिमों के लिये बेनूर (अप्रकाशित) है। फिर दाबः तुल अर्ज़ (विशाल दानव रूपी मानव) ज़ाहेर (प्रकट) हुआ, तथा दज्जाल को (अज्ञानता रूपी दानव) इल्मे लदुन्नी (तारतम ज्ञान) द्वारा ज़हालत (अज्ञानता) हटाकर ख़त्म (अर्थात अज्ञान नष्ट) करके, कुरान पाक की वाणी को ज़ाहिर और बातिन रुप से समझाया। सनद (सनंद) वाणी के तीस (30) प्रकरण उतरे। फ़क़ीर सय्यिद मुहम्मद इब्न-ए-इस्लाम की मुलाकात देहली में वाजिद शाह कलंदर के अस्थानः पर शाह-ए-वक्त ख़लीफ़ा-ए-रूकनद्दीन आलमगीर औरंगजेब शहंशाह मुहीउद्दीन से हुई। बादशाह पुरानी कमरी ओढ़ कर आया तथा दरगाह के द्वार पर जहाँ पर सबके नालैन रखे थे, वहीं पर नम्रतापूर्वक बैठकर इल्म-ए-लदुन्नी अर्थात ब्रह्मज्ञान का रसपान करता

रहा। तब बादशाह ने पेशकश की कि आपको हम पाँच हज़ार कोस की जागीर, पचास हज़ार घुड़सवार, सत्रह सौ हाथी, एक लाख सिपाही भेंट करते हैं। अतः आप हमें भी शरिअत पर चलने का सही मार्ग बताएं व सारे संसार में शरिअत (नियम), को शुद्ध रूप से प्रचलित कीजिए। अंततः श्रीजी ने बादशाह को तरीकत, मारिफत, हक़ीक़त का ज्ञान ग्रहण करने को कहा, तो बादशाह ने कहा कि यह शराः मुझसे नही जुदा हो सकती है। तब श्रीजी ने कहा कि अब हमें दूसरा मार्ग अपनाना होगा। जिसका बादशाह मुहीउद्दीन आलमगीर औरंगज़ेब पर अत्यंत प्रभाव पड़ा। तत्पश्चात दौलताबाद (खुल्दाबाद) में श्री जी ने पुनः औरंगज़ेब बादशाह के अमीरों, दरबारियों व उल्मा-ए-दीन (धर्माधिकारियों) को बादशाह के लिए पैग़ाम-ए-शऊर (जागनी संदेश) भिजवाया। जिस पर उन्होंने ''फ़क़ीर सय्यिद मुहम्मद इब्न-ए-इस्लाम'' अर्थात सरदार महमत आत्मज निजानंद के दस्तख़त (हस्ताक्षर) करके भिजवाया। क्योंकि हदीस में बयान है कि आख़िरी इमाम का नाम सैय्यद मुहम्मद इब्न अब्दुल्ला होगा तथा वह सैय्यद हसन-हुसैनी वंश परंपरा में ही होगा।

इसके बाद श्रीजी कुम्भ के मेले में हरिद्वार पहुँचे जहाँ पर सभी धर्म संप्रदायों के विद्धत/संतजन अपने अखाडों व अनुयाइयों सहित विराजमान थे। समस्त विद्वान श्रीजी के एक प्रश्न का भी उत्तर नहीं दे सके। कि मृत्यु के बाद अखण्ड जीवन पाँच तत्व, तीन गुण, (अष्टावरण) सप्त शून्य (स्वर लहरी) से भिन्न किस अखण्ड स्थान पर अखण्ड

मोक्ष प्राप्त हो सकता है। निरुत्तर होकर सभी विद्वानों द्वारा पूछने पर श्रीजी ने निजानंद संप्रदाय की पद्धति सविस्तार समझाई। यथा:-

ब्रह्मानन्दरसज्ञानां ब्रह्मज्ञानवतां सताम्
पद्धति ब्रह्मसृष्टि ना वदयामि शृणु सुन्दरि
गोत्रमुक्त चिदानंद ब्रह्मानन्दो हि सद्गुरू:
शिखा ज्ञानमयी प्रोक्ता सूत्रमक्षर रूपकम्
किशोरी परमेष्टा च सेवनं पौरूषोत्तमम्
पाति व्रत्यमनन्यत्वं साधनं समु दाहतम्
वृंदावन नित्यमुक्तं विलाससुखसंज्ञकम्
जाप्यं च युगलं नाम तारतम्यो (मो) मनु स्मृत:
ब्रह्मविद्या परादेवी देवो ब्रह्म सनातनम्
शाला गोलोक इत्युक्तो द्वारमूर्ध्वमुदाहतम्
स्वसंवेद समादिष्ट: फल नित्यविहारकम्
दिव्यब्रह्मपुरं धाम परात्परमुदाहृतम
सदगुरोश्चरणं क्षेत्रं सर्वशुद्धिकरं परम्
यमुनासंज्ञकं तीरं मननं प्रेमलक्षणम्
श्री मद्भागवतं प्रोक्तं श्रवणंसारमदभुतम्
ऋर्षि: प्रोक्तो महाविष्णु: ज्ञानं जागृत्स्वस्वरूपकम्
आन्नदाख्यं कुल प्राप्तं नित्ये धाम्नि प्रकीर्तितम्
सम्प्रदायश्चिदानन्दो निजानंदै: प्रकाशित:
एवं पद्धतिराख्याता पुरूषोत्तमसंज्ञिका
वर्तितव्यं ततो भद्रे साधनेरात्मलब्धये।।

(श्री महेश्वर तंत्र 45-54)

अर्थात्

**सतगुरु ब्रह्मानंद हैं, सूत्र है अक्षर रूप।**
**सिखा सदा इन से परे, चेतन चिद जो अनूप।।**
**सेवन है पुरूषोत्तम, गोत्र चिदानंद जान।**
**परम किशोरी इष्ट है, पतिव्रत साधन मान।।**
**जुगल किशोर को जाप है, मंत्र तारतम सोय।**
**ब्रह्मविद्या देवी सही, पुरी नवतन मम जोय।।**
**अठोत्तर सौ पख शाखा सही, साला है गौलोक।**
**सतगुरू चरण को क्षेत्र है, जहा जाए सब सौक।।**
**सुख विलास माहे नित वृंदावन, ऋषि महाविष्णु हैं जोय।**
**वेद हमारो स्वसं है, तीरथ जमुना सोय।।**
**सास्त्र श्रवण श्री मद्भागवत, बुद्ध जाग्रत को ज्ञान।**
**कुल मूल हमारो आन्नद है, फल नित्य विहार प्रमान।।**
**दिव्य ब्रह्मपुर धाम है, घर अक्षरातीत निवास।**
**निजानंद है संप्रदाय, ये उत्तर प्रस्न प्रकास।।**
**श्री देवचंद जी निजानंद, जिन प्रकट करी संम्प्रदा एह।**
**तिनथें हम यह लखी है, द्वार पावे अब तेह।।**

(श्री बीतक साहिब)

तब सभी धर्माचार्यों व विद्धानों ने शास्त्रों से प्रमाण पाकर श्रीजी साहिब महमत प्राणनाथ स्वरूप को विक्रमी संवत (1735) सतरह सौ पैंतीस व शक संवत सोलह सौ (1600) एवं ईस्वी सन 1678 में श्री विजयाभिन्द (श्री सदगुरु देवचंद्र जी) एवं बुद्ध निष्कंलक अवतार (श्री मेहराज जी) ''कल्किवतार'' घोषित किया तथा उनके नाम का संवत बुध जी शाका प्रथम वर्ष चलाने हेतु उदघोषणा की, क्योंकि इस वर्ष के पंचाग में पूर्व की भविष्यवाणी अनुसार

विक्रमी संवत (1735) सत्रह सौ पैतीस में बारह (12) माह के स्थान पर ग्यारह (11) माह का साल (वर्ष) था एवं इस वर्ष साल में एक ही माह में ही सूर्यग्रहण-चंद्रग्रहण के पश्चात पुच्छल तारा भी दिखाई दिया। जो कि कल्कि अवतार प्रकट होने का मुख्य संकेत प्रमाण निशान है। अंतत: कलियुग रूपी दुष्ट का अंत कल्किअवतार श्रीजी ने अपने तारतम्य रूपी ब्रह्मज्ञान से कर दिया।

इसके बाद श्री जी साहिब जी पुन: दिल्ली आये तथा मुगल बादशाह औरंगज़ेब को एवं उदयपुर के राणा राज सिंह एवं काबुल में मुग़ल सूबेदार महाराज जसवंत सिंह जी के पास भी जागनी संदेश भेजा। तत्पश्चात मंदसौर में धर्म जागृति यात्रा के अंतर्गत औरंगाबाद के राजा भाव सिंह को जागनी संदेश दिया। लेकिन उसने कुछ भौतिक चमत्कार देखने की आस (इच्छा) की, लेकिन नूरी (अलौकिक) आवेश न सहने से मिथ्या नश्वर तन शरीर छूट गया। इसी प्रसंग को प्रमाण देकर सुंदरसाथ में धारणा बना दी गई कि चितवनी नही करनी चाहिए, क्योंकि इसमें जान (प्राण) निकल जाने का भय है। जबकि सच यह है कि चितवनी ही श्रीराजजी से मिलने का एकमात्र साधन है। बाकी सभी प्रकार की नवधा भक्ति की साधना पद्धति केवल जाहिरी (क्षणिक) सुख प्रदान करती है। आत्मिक सुख (प्रेम आनंद) तो चितवनी से ही प्राप्त हो जाता है। यथा-

**जीवते मारिये आपको शब्द पुकारत हक़।**
**गर मरेंगे नहीं मोमिन, तो क्या मरेंगे मुनाफिक़।।**

अर्थात संसारिक प्राणी की अपेक्षा ब्रह्ममुनि ही मिथ्या मोह

मद ही को त्यागकर शुद्धता से परब्रह्म का अलौकिक प्रेमानंद ग्रहण करेंगे। यथा:-

**''जो तू चाहे हक़ बका, पहले पी तू शर्बत मौत का,**
**तो कर तहकीक़ मुकर्रर''** अर्थात हम माया से पीठ करके अखण्ड अलौकिक निधि को पाने का प्रयत्न करें। अत: सुंदर साथ जी, जीवन में भी यह उद्धेश्य होना चाहिए, कि एक दूसरे को साक्षात्कार/चितवन करना सिखायें। यथा:-

**''एक सखी दूजी को अचरा पकर प्रेम सिखलाऊसी''**

जब श्रीजी साहिब जी रामनगर आये (पधारे), तो वहाँ पर छत्रसाल जी के भतीजे देवकरण से मिलन हुआ। क्योंकि गुरुवाणी ग्रंथ साहिब में लिखित भविष्यवाणी के अनुसार श्रीजी एवं छत्रसाल जी से मिलने का अब संयोग (संकेत) पूर्ण होने का सुअवसर है कि:-

**''बीतेगा उन्तालीसा दगेगा चालीसा, ता होसी मर्द-मर्द दा चेला,**
**नानक नानक गुरू सांई मैंनू बिखाई आ सत-सत दी वेला''**

अर्थात विक्रमी संवत सतरह सौ उन्तालीस (1739) जब समाप्त हो तथा सतरह सौ चालीस (1740) शुरू (प्रारंभ) होगा अर्थात ईस्वी सन 1682-1683 हो तो दो (2) प्रमुख ब्रह्मज्ञानियों के तनों की बह्मात्माओं यानि श्रीजी साहिब प्राणनाथ जी तथा छत्रसाल महाराज का मिलन होगा। अंतत: गुरु नानक देव जी की भविष्यवाणी के अनुसार इन दोनों महानतम प्रमुख शक्तियों का मिलन हुआ तथा कलियुग का प्रभाव घटना शुरू हो गया। कुछ विद्वान इस प्रसंग को गुरु गोविंद सिंह जी व बन्दा सिंह बहादुर बैरागी

के मिलन से कहते हैं, जो कि उचित नहीं है क्योंकि उनका मिलन इसके पश्चात ईस्वी सन 1707 विक्रमी संवत 1764 में हुआ था।

अंतत: पन्नाजी में आकर श्रीजी ने धर्म ध्वजा (झंडा) खड़ा किया। इस पवित्र स्थान पर पहले से ही शंकर जी ने पार्वती जी को कल्किवतार के आने की भविष्य वाणी की हुई थी। यथा:-

**''पद्मावती केन शरदे विन्ध्य पृष्ठे विराजते,**
**इन्द्रावती नाम सा देवी भविष्यति कलौयुगै''**

अत: आप श्री जी ने किल-किला नदी के विषैले पानी को स्वयं के चरण कमलों द्वारा अमृत समान किया एवं सभी को यह जाहिरी (लौकिक) चमत्कार दिखाया। तब सभी आदिवासियों ने कहा यह तो साक्षात श्री कृष्ण जी हैं।

अंतत: महाराजा छत्रसाल जी महाराज ने श्रीजी साहिब जी को साक्षात परब्रह्म का स्वरूप जानकर अपनी चौपुड़ा हवेली में पधराकर सपरिवार प्रथम बार युगल स्वरूप (श्रीजी एवं बाई जी) की आरती उतारी यथा-

**पूर्ण ब्रह्म ब्रह्म से न्यारे, आनन्द अखंड अपारे।**

तत्पश्चात छत्रसाल जी ने श्रीजी से विनती की कि हे धनी (स्वामी)! मुझे सुंदरसाथ जी की कुल सेवा बख्श (प्रदान कर) दीजिए, तो श्रीजी ने उन्हें कहा कि सुबह (प्रात: काल) से लेकर शाम तक पन्ना जी के चारों दिशाओ में घोड़ा दौड़ाकर सूर्य छिपने (सूर्यास्त) से पहले पन्ना पहुँचना! तत्पश्चात महाराजा जी के निर्धारित समय पश्चात वापस आने पर आपने आर्शीवाद स्वरूप कहा कि जहाँ-

जहाँ पर भी आपके घोड़े भले-भाई की टाप पड़ी होगी, वहाँ जमी़न से हीरे निकलेंगे। यह जाहेरी प्रकट (अलौकिक) चमत्कार देखकर सभी हैरान हो गये। यथाः-

**छत्ता तेरे राज में, धक-धक धरती होए।**
**जित-जित घोडा मुख करे, तित-तित फतह होए।।**

छत्रसाल जी ने कहा मुझे तो कोई वीरों के समान काम करने की सेवा प्रदान कीजिये। मेरा निवेदन है कि ऐसा करते है! आप स्वयं हाथी के हौंदें पर विराजित हों, एवं मैं भी घोड़े पर सवार होकर आस-पास के राजाओं से चौथ (कर) वसूल ब्राह्मण करूँगा, और आज के बाद कोई भी मुग़ल बादशाह औरंगज़ेब को चौथ (कर) नही अदा करेगा, समस्त कर श्रीजी की सेवा में अर्पण होगा। आप भी पंडितो व क़ाज़ियो से शास्त्रार्थ तों, यों करके अलौकिक ब्रह्मज्ञान रूपी तारतम्य (तारतम) ज्ञान का सारे देश में धर्म प्रचार कीजिए।

(श्रीजी साहिब जी के आर्शीवाद से जब तक छत्रसाल जी के वंशजों से लेकर रानी लक्ष्मीबाई तक ने प्रेम-पूर्वक सेवा निभाई, तब तक उनकी यशकीर्ति देश में सर्वत्र प्रसारित रही। परंतु धीरे-धीरे महाराजा जी के वंशजों द्वारा सुरा-सुंदरी के मोह में समर्पण की भावना त्यागने के कारण इस परम्परा का पतन हो गया। अंततः ईस्ट इंण्डिया कम्पनी के अधिपत्य में अंग्रेजों की कुटिल नीति व अनुचित राजकरों से बुंदेलखंड का विकास न हो सका। ) छत्रसाल जी के चाचा बलदाऊ दीवान ने तब दारूल-उलूम महोबा के क़ाज़ी अब्दुल रसूल तथा मथुरा से दिग्विजयी ब्राह्मण श्रीमान सुंदर,

वल्लभ तथा बद्री जी को भी बुलवाया। जब उन्होंने श्रीजी साहिब जी की परीक्षा लेनी चाही, तब श्रीजी ने क़ाज़ी से कहा कि शेख़ साहिब, हम तो उम्मी (अनपढ़)हैं। आप आलिम-ए-दीन हैं। कृपया हमें समझाएं कि कुअनि/कुरान मजीद के अनुसार कितने तरह (प्रकार) की पैदाईश है, तो वह स्पष्ट जवाब (उत्तर)न दे सका तथा कहा कि कुरान पाक में है तो! लेकिन मुझको आज दिन तक (अर्थात सत्तर वर्ष की आयु तक) कुछ भी सुस्पष्ट समझ नही पड़ा। जब श्रीजी ने उसे (5) पाँच तरह की पैदाईश की पहचान क़ुरान तीसरे पार: तिल्कलर्रसूल से सर्वोच्च व्याख्यां त.फ़सीर मवाहिब-ए-आलिया / हुसैनी से प्रमाणित कर के कहा कि एक हाथ से उम्मत-ए-मुहम्मदी, दो हाथ से ईसा रूहुल्लाह व इमाम महदी साहिब का समुदाय, मूल इब्तदा से (ब्रह्ममुनि) मोमिन रूहें व ख़िल्कत से फरिश्ते (देवों) एवं कल्म:-ए-कुंन से नाशवान संसारिक प्राणियों की उत्पत्ति की पहचान कराई, तो उसने कुरान पाक को सिर पर उठाकर कसम (सौगंध) खाई कि बरहक़ (नि:संदेह) यही आख़रूल (आख़िरी) इमाम मुहम्मद महदी साहिब हैं। अगर मै गलत या झूठ कहूँ, तो पाक क़ुरान मजीद मेरा सर्वनाश करे!

इसके पश्चात श्रीजी ने पंडित सुंदर, बल्लभ, बद्री से जब श्रीमद् भागवत ग्रन्थ में वर्णित मोह तत्व से भिन्न आदि नारायण का निवास स्थान सम्बन्धी प्रश्न पूछे, तो वह भी समुचित उत्तर न दे सके तथा अगले दिन उत्तर देने का वचन लेकर रात्रि में नये मनघढ़ंत श्लोक बना लाये। तब छत्रसाल

जी ने आवेशपूर्वक कहा कि आज से कोई भी बुंदेला इनको गुरु नही बनायेगा, क्योंकि यह तो रामचरित मानस में भी लिखित है। यथा:-

**''पण्डित सोई जो गाल बजावा''**

अर्थात कलियुग के स्वयंभू विद्वान स्वयं के आचरण से हीन होंगे। इसके पश्चात जलालपुर कालपी बुंदेलखण्ड के उल्मा-ए-दीन (धार्मिक विद्वान) क़ाजी, मुफ़्ती साहिब एवं सभी आलिमों (विद्वानों) ने क़ियामत के निशान श्री जी से समझ कर मज़हरनामा अर्थात महज़रनाम: (आख़िरी इमाम महदी साहिब के प्रकट होने का घोषणा पत्र) बनाकर औरंगजेब बादशाह के पास भेजा कि श्री जी साहिब ही आख़रुल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज़्ज़मां हैं तथा सुंदर, वल्लभ, बद्री ने भी स्वीकार किया कि श्रीजी साहिब प्राणनाथ जी ही श्री विजयाभिनंद बुध नेहकंलक (निष्कंलक) अवतार हैं जो कि कलियुग के अंतिम कल्किअवतार हैं।

तत्पश्चात श्रीजी द्वारा ५ पदमावती मुक्ति धाम परना (पन्ना) जी में ही सागर, खुलासा, सिनगार, परिक्रमा, मारिफ़त, सागर सिंधी ग्रंथ पूर्ण हुए एवं क़ियामतनामा चित्रकूट में पूर्ण हुए, खटरूती, रास, प्रकाश, कलश जागनी यात्रा के प्रारम्भ में गुजरात में अवतरित हुए। दिल्ली के समीप अनूप शहर में सनंध (सनद) ख़ुलासा, एवं किरंतन जगह-जगह पर उतरे। कुल चौदह ग्रंथ संकलित हुए। इनको ही श्रीजी के चौदह अंग स्वरूप समझा जाता है। प्रकाश-कलस गुजराती का हिंदी अनुवाद कलस एवं प्रकाश हिंदुस्तानी के नाम से श्रीजी ने अनूप शहर में स्वयं किया। अत: सोलह ग्रंथ बन

गए। परंतु सिद्धान्त रूप में चौदह अंगों के समान चौदह ग्रंथ हैं। यथा:- यो चौदह अंग पूरणभए''

फिर बिक्रमी संवत 1751 की चौथ अर्थात विजयाभिनंद बुद्ध निष्कलंक शाका संवत 16 ईस्वी सन 1694 हिज़री सन 1106 में जब दो घड़ी रात बाकी थी, अर्थात प्रात: काल (भोर) होने से पूर्व ब्रह्म मुहूर्त की पावन बेला में श्रीजी साहिब जी ने अंतर्ध्यान होकर ब्रह्म समाधि ले ली। तब विरह की अवस्था में कई प्रमुख सुदंरसाथ ने भी देह त्याग दी। इसका प्रमाण गुम्मट जी के दक्षिण दिशा मे ऊपर फ़ारसी लिपि मे लिखा है।

**हक़ हक़ हक़**

**बा रोज़ जुमा दो घड़ी, शब आख़िरी साज़ दहम**

**यक हज़ार यक सद सष साल हिजरी ( 1106 )**

**सत्ताईस ( 27 ) तारीख़ माह मुर्हरम, विसाल-ए-महबूब कर्दः शुद, कमतरीन खाकसारी लिखतंग नारायण दास**

अर्थात सत्य-सत्य-सत्य

''हिजरी सन 1106 मे मुर्हरम माह की सत्ताईसवीं (27) तारीख को शुक्रवार की रात के दो घड़ी बाकी रहने (ब्रह्ममुहूर्त प्रात: काल) में श्रीजी अंतर्ध्यान (समाधिस्थ) हुए, विनीत सेवक लेखक चरण रज नारायण दास''

गुम्मट जी परना धाम पन्ना जी के मुख्य द्वार के ऊपर दोनों मेहराबों के बीच मे यह शब्द फ़ारसी लिपि में लिखे हैं।

## दरगाह-ए-मुक़द्दस

**हज़रत आख़रुल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज़्ज़माँ** अर्थात पवित्र दरबार श्री विजयाभिनंद बुद्ध निष्कलंक अवतार

(महमत प्राणनाथ जी) का तथा इसके दांई तरफ फारसी में लिखा है।

**निजनाम श्री कृष्ण जी, अनादि अछरातीत।**
**सो तो अब ज़ाहेर भए, सब विध वतन सहीत।।**

अर्थात क्षर मृत्युलोक गोलोक व अविनाशी अक्षर से भिन्न अक्षरातीत परब्रह्म का दिव्य अलौकिक शक्ति सर्वप्रथम संसार में श्रीकृष्ण जी के स्वरूप में अपनी आन्नददायक शक्तियों के साथ मायावी पृथ्वी लोक में अवतरित हुए थे। अब पुनः स्वयं प्राणनाथ जी की पाँचो शक्तियाँ ब्रह्मात्माओं के साथ अठ्ठाईसवें कलियुग में प्रकट हुए हैं। बांई तरफ़ फ़ारसी में ही लिखा है-

**''ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलल्लाह,**
**सल्ललाहु आलैहि व सल्लम''**

अर्थात क्षर (नाशवान) ब्रह्माण्ड रूपी संसार से भिन्न, अखण्ड अक्षर से भिन्न अक्षरातीत परब्रह्म है एवं वास्तव में वह पूर्णब्रह्म ही उपास्य हैं तथा (प्रशंसित) मुहम्मद साहिब उनके अलौकिक संदेश वाहक हैं। वह अपने सभी अनुयायियों को मायावी अंधकार से निकाल कर सत्य, अनन्य प्रेम रूपी अनंत अलौकिक दिव्य परमधाम से परब्रह्म प्रियतम से संबन्ध स्थापित कराते हैं। अतः उन पर एवं अनुयायी साथियों पर भी कोटि-कोटि अनंत अनुशंसाए है।

अंदर की मेहराब मे पुनः फ़ारसी लिपि में लिखा है, कि

**''निजनाम श्री कृष्ण जी, अनादि अक्षरातीत।**
**सो तो अब ज़ाहेर भए, सब विध वतन सहीत।।''**

**''ब्रज रास और नवतनपुरी लीला भी है परना माहें''**

अर्थात मृत्युलोक के क्षर ब्रह्माण्ड से भिन्न एवं अविनाशी अरधाम से भी भिन्न परब्रह्म का अलौकिक, चेतन, आनंद का परम धाम है, जहां से इस मायावी संसार में अपनी ब्रह्मांगना प्रियाओं के साथ सर्वप्रथम श्रीकृष्णजी के स्वरूप में अवतरित हुए। अब ब्रज, रास एवं नवतन पुरी की जागनी लीला भी परना धाम (पन्ना) में ही है।

**अंदर की मेहराब में पुनः फ़ारसी लिपि में लिखा है कि**

**''मख़्तारे हिंद विजयाभिनंद नेहकलंक अवतार''**

अर्थात् आज़ाद हिंदुस्तान के प्रतिनिधि (व्यवस्थापक) कल्कि अवतार। एवं पुनः **''जब मुहम्मद, अली, महदी, ईसा व रूहें भी आए''** तथा पिछले दरवाजे की मेहराब पर फ़ारसी लिपि में लिखा है। कि **''ज़इल्म शर्त ईसा, इमाम महदी आख़रूल जमाँ, दफः दज्जाल कर्दः कौसर क़ौल हाल बरसार व मुहम्मद दाद ना अज हम दिल आहद शद मी करीन व साकम श मुजब शम सारम''** अर्थात- अपने वचन के अनुसार पुनः ईसा रूहुल्लाह, आख़रूल ज़माँ इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज़्ज़माँ ने संसार में प्रकट होकर अज्ञानता रूपी दुष्ट दानवता को नष्ट करके अनंत शाश्वत प्रेम द्वारा मोक्ष प्रदान कर दिया एवं मुहम्मद साहिब के पवित्र-वचन के अनुसार परमधाम के कौसर तालाब के शीतल, मधुर सुगंधित आनन्ददायक जल अर्थात अलौकिक बह्मज्ञान निधि रूपी तारतम्य (तारतम) को भौतिक जगत में हमें रसपान करा रहे हैं। परिणामतः हम अपने अलौकिक धाम के प्रेम आन्नद में रसमग्न हो रहे हैं।

विशेष प्रसंग एक बार प्रसिद्ध विद्वान विद्युतदमन जी भट्ट शास्त्रार्थ में दिगविजय प्राप्त करके घर लौटे तो अहंकार के वश होकर उन्होंने अपनी पत्नि से अपनी आरती-पूजन करने को कहा क्योंकि उन्हें यह भ्रम हो गया कि ''**अहं ब्रह्मास्मिं**'' अर्थात् मैं परब्रह्म के समान हो गया हूँ। तब उनकी पत्नी ने उनका अहं समझा एवं उनसे विनती करके कहा कि पहले परना वाले बाबा जी अर्थात् श्रीजी साहिब महमत प्राणनाथ जी से तो मिल आइए! तब भट्ट जी बैलगाड़ियों पर अपने ग्रंथों को लादकर परना धाम, पन्ना पहुँचे, तो वहां घाट पर पाँच वर्ष की बालिकायें खेल-खेल में ब्रह्मवाणी का गायन कर रही थीं कि

''**ना ईश्वर ना मूल प्रकृति, ता दिन की कहू आपा-बीती**'',

यह सुनकर भट्ट जी चौंक पड़े कि भाई! जब यह मिथ्या सृष्टि (अर्थात मायावी संसार) भी नही था, उस समय का अलौकिक ब्रह्मज्ञान यह अबोध बालिकाएँ गा रही हैं। तब श्रीराजजी कृपा से उनकी विद्धता का अहंकार टूट गया तथा वह श्रीजी साहिब महमत प्राणनाथ जी के चरणों में नतमस्तक हो गये एवं तारतम्य ज्ञान ग्रहण कर उन्होंने सँस्कृत भाषा में बुद्ध-गीता, निर्गमार्थ दीपिका, विद्धतदमनी इत्यादि धार्मिक ग्रंथ लिखे, जिससे कि आम जन (लोगों) एवं विद्धानों को श्रीजी साहिब महमत प्राणनाथ जी के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान सरलता-पूर्वक प्राप्त हो जाए।

## पंजाब में जागनी लीला

सुंदरसाथ जी, अब आप से पंजाब में श्रीजी साहिब

जी द्वारा करवाई गई जागनी लीला के कुछ मुख्य अंशों का वर्णन किया जाता है। जिससे कि पंजाब के धर्मवीर सुंदरसाथ अपने गौरवमयी इतिहास की परम्परा निर्वाह के लिये धर्म-मार्ग पर अग्रसर हों। तथा श्रीजी की मेहर के सुपात्र बनकर स्वयं का जीवन धन्य-धन्य करें एवं समस्त ब्रह्माण्ड अखिल विश्व की जागनी लीला में अपना अमूल्य योगदान प्रदान कर पाएँ। **यथाः-**

**''सुख सीतल करूं संसार''**

मध्य काल में जब पंजाब में मुग़ल सत्ता अपने चरम उत्कर्ष पर थी, उस समय मुग़लों के अन्याय व अत्याचार के विरूद्ध हिंदू-सिख समान रूप से संघर्षरत थे। गुरु गोबिन्द सिंह जी सत्य धर्म की स्थापना हेतु सद्मार्ग में अपना सर्वस्व बलिदान दे चुके थे। इस कठिन समय में वैरागी संत बंदा बहादुर सिंह ने गुरु गोबिन्द सिंह जी के हुक्म (निर्देशों) से सरहिंद पंजाब में आकर मुगल सत्ता की ईंट से ईंट बजा कर रख दी। लेकिन गुरदासपुर के किले में भूखे-प्यासे ही ज़ालिमों से संघर्ष करते हुऐ गिरफ्तार हुए। अंततः दिल्ली में बादशाह फर्रूख़सियर के सामने कट्टर आततार्इयों के बर्बर अत्याचार सहते हुए टुकड़े-टुकड़े होकर भी हँसते-हँसते अपने प्राणों को सत्य धर्म के मार्ग में न्यौछावर कर दिया परन्तु ज़ालिमों से हार नही मानी। इसलिये वे अमर बलिदानी कहलाये।

**''क़ुर्बानी को नाम सुन, उलसत मोमिन अंग''**

(किरंतन 90/9)

इस समय तक धाम-धनी श्रीजी साहिब प्राणनाथ

जी भी अंतर्ध्यान हो चुके थे और बुदेलखंड में महाराजा छत्रसाल जी ने मुग़ल सत्ता को अपने राज्य की सीमा में जड़ से उखाड़कर श्रीजी की प्रेरणा स्वरूप एक ऐसे सत्य धर्मराज्य की स्थापना की जिसका प्रमाण समस्त धर्म-संप्रदायों के पवित्र ग्रंथों मे है। इस विषय में समस्त विद्वान एकमत हैं कि महाराजा छत्रसाल जी के धर्म-राज्य में भी ऊँच-नीच, अमीर-गरीब एक समान जीवन निर्वाह करते थे तथा धार्मिक कट्टरवाद की प्रताडना नहीं थी। उन्होंने देश-विदेश में प्रत्येक जगह (स्थानो) पर सुंदरसाथ को श्री मुख वाणी ''कुल्जुम'' स्वरुप साहिब देकर श्रीजी साहिब जी के जागनी संदेश को जन-जन तक पहुँचाने का बीड़ा उठाया हुआ था। यथाः- **''ब्रह्मसृष्टि और दुनिया देऊं जगाए''**

पंजाब में श्रीजी साहिब जी की जागनी लीला का कारज-कारण के संयोग की भूमिका इस प्रकार से है कि जब श्रीजी साहिब जी अपनी जागनी लीला के अंतर्गत जब राम नगर पहुँचे, तो वहाँ पर उन्होने झडूंला निवासी बिहारी दास जी को तारतम्य ज्ञान द्धारा जागृत किया तत्पश्चात श्रीजी के अंतर्ध्यान होने पर इन्होने ही भैय्या सीताराम जी को परमधाम की वासना पहचान कर तारतम्य (तारतम) ज्ञान से जागृत कराया।

जब साधना हेतु भैया सीताराम जी एक बार श्रीजी साहिब जी के गुम्मट बंगला साहिब जी मुक्ति-धाम दरबार में ध्यानमग्न थे, तो श्रीजी ने स्वयं साक्षात्कार-दर्शन देकर उन्हें आदेश दिया कि आप पँजाब के कमालिया नाम के गाँव में (ज़िला मिंटगुमरी जो कि अब पश्चिमी पंजाब

पाकिस्तान में हैं) जाकर दर्शन भगत नाम के नानक पंथी संत को परब्रह्म स्वरूप श्रीजी साहिब महमत प्राणनाथ जी का अलौकिक ब्रह्मज्ञान रूपी तारतम ब्रह्मवाणी का जागनी संदेश सुनाओ। जिससे कि पँजाब की एक हज़ार (1000) सिरदार सखियां वासनाएं जागृत होकर अपने मूल स्वरूप को पुनः स्मरण करें और श्रीजी साहिब जी के सत्य धर्म निजानंद संप्रदाय के जागनी संदेश को सम्पूर्ण जगत (संसार) में प्रसारित कर दें, जिससे कि समस्त प्राणियों को मोक्ष द्वारा सहज मुक्ति प्राप्त हो सके।

जब भैया सीताराम जी ने सभी धामी भाइयों से श्रीजी के निर्देश का वर्णन किया, तो उनको महाराजा जी के निर्देशानुसार परनाधाम (पन्ना) से ब्रह्मज्ञान रूपी श्रीजी की मुखवाणी कुल्जुम स्वरूप साहिब की हस्तलिखित प्रति देकर तथा कुछ संत-महात्मा सुंदरसाथ के साथ पंजाब की ब्रह्मात्माओं के जागनी हेतु विदा किया। भैय्या जी पैदल सिर पर ब्रह्मवाणी ''क़ुल्ज़म'' (स्वरूप साहिब) को रखकर परना (पन्ना) से कमालिया ग्राम, पंजाब आए। यह बसंतपंचमी का पवित्र दिन था। क्योंकि हिंदुस्तान में प्राचीन काल से ही इस दिन को एक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। अतः परम्परा निर्वाह हेतु ही समस्त भारत के श्री प्राणनाथ एवं प्रणामी मंदिरों में से केवल जालंधर के श्री प्राणनाथ मंदिर का वार्णिकोत्सव मनाया जाता है। परब्रह्म स्वरूप श्रीजी साहिब महमत मेराज प्राणनाथ जी के श्री मुख से उच्चारित तारतम ज्ञान रूपी ब्रह्मवाणी क़ुल्जुम स्वरूप साहिब के पंजाब में आगमन की पवित्र स्मृति हेतु आन्नद उत्सव

मनाकर भैय्या सीताराम को श्रृद्धांजलि एवं धाम-धनी प्राणनाथ जी को रिझाया जाता है। पँजाब में उस समय मुग़ल हुक़ुमत के ज़ोर व ज़ुल्म (अन्याय व अत्याचार) की आंधी चल रही थी। ऐसे कठिन समय में श्रीजी साहिब विजयाभिनंद बुद्ध निष्कलंक अवतार, आख़रूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज़्ज़माँ कल्कि अवतार का अमृतमयी ब्रह्मज्ञान रूपी तारतम ब्रह्मवाणी क़ुल्ज़म स्वरूप साहिब का अलौकिक जागनी संदेश लेकर भैया सीताराम जी ने दर्शन भगत जी से भेंट की।

भैय्या सीताराम जी ने भगत जी को समझाया कि पुराण संहिता एवं माहेश्वर तंत्र नामक ग्रन्थों में शिवजी ने परमधाम की एक हज़ार ब्रह्मसृष्टियों ब्रह्मसृष्टि सिरदार अर्थात ब्रह्मज्ञानियों के पँजाब में अवतरण का विवरण दिया है। (इसका स्पष्ट प्रमाण माहेश्वर तंत्र ग्रंथ के साथ-साथ पुराण संहिता में भी है।)

अतः आप जागृत होकर अपने मूल स्वरुप को याद कर अन्याय व अत्याचार के विरुद्ध कमर बाँधकर अग्रसर हो। निजानंद संप्रदाय के आध्यात्मिक धर्म-मार्ग पर निष्ठापूर्वक संघर्षरत होकर पंजाब की वीर भूमि में धर्म जागनी हेतु निश्चिंत होकर सेवा कीजिए।

इस प्रकार पंजाब में परब्रह्म श्रीजी साहिब जी द्वारा प्रदत्त तारतम आनन्द ब्रह्मज्ञान की निज आन्नदमयी ब्रह्मवाणी का प्रचार-प्रसार हो सका। भैया सीताराम जी के साथ परना धाम (पदमावती पुरी) से कुछ निर्धन सुंदरसाथ भी आये थे। उन्होनें आजीविका हेतु एक जमींदार सआदत खां

के यहाँ पर नौकरी कर ली। खाली समय में चर्चा का भी आनन्द प्राप्त करते रहें।

दर्शन भगत जी संसार में एक सच्चे साधक के रूप में एक अतिथि के समान रहते थे। वह दिन-रात परब्रह्म का सुमिरन (स्मरण) करते हुऐ सदैव सत्संग मे लीन रहते थे। वह किसी से भी भौतिक द्रव्य, धन-दौलत की इच्छा नहीं करते थे और न मन में यह घंमड करते थे कि मैं इतना पहुँचा हुआ संत विद्वान हूँ। अतः मुर्दार दुनिया में मृतक के समान जीवन निर्वाह करते थे। न ऊँच नीच को मानते, न अमीरी-गरीबी में भेद करते, तथा न ही मान-अपमान के मद-मोह के मिथ्या भ्रमजाल में पड़ते थे। ब्रह्ममुनि के यह लक्षण उनके अंदर सुशोभित थे। सच्ची अध्यामिकता की भी यही पहचान है। कि प्राणी माया में जल की मछली समान निर्लिप्त रहे। यथाः- **''जल में न्हाइये कोरे रहिए''**। भैया सीताराम जी ने दर्शन भगत जी को तारतम ज्ञान वाणी चर्चा, चितवनी का ब्रह्मज्ञान दिया। परमधाम का निस्बत (अकुंर) होने के कारण उनको बहुत निज-आनन्द आया, लेकिन आत्म जागृति का उचित समय नहीं होने से वह जागृत न हो सके। अंततः भैया जी वापस मुक्ति पीठ परना धाम पहुँचे, तो पुनः श्रीजी साहिब प्राणनाथ जी ने उनको दर्शन देकर कहा कि भैय्या जी! आप वापस क्यो लौट आए? जब कि अब दर्शन भगत जी की आत्म-जागृति होने का समय आ पहुँचा है। अतः आप शीघ्र ही कमालिया (पंजाब) जाकर दर्शन भगत जी को तारतम ज्ञान प्रदान करो। समस्त पंजाब में जागनी लीला वह स्वयं करेंगे।

पुनः जब भैया सीताराम जी कमालिया आये, तो दर्शन भगत जी ने प्रसन्नतापूर्वक श्रीजी प्रदत्त ब्रह्मज्ञान तारतम ज्ञान रूपी अमृत फ़ल ब्रह्ममुनि भैय्या सीताराम जी से ग्रहण किया। तथा **पंजाब में जागनी** के सूत्रधार बने। अंततः परमधाम के भेद तारतम ज्ञान से भगत जी पर भी ज़ाहिर होने लगे। फिर उन्होने ब्रह्मवाणी का विपुल साहित्य पन्ना धाम से मंगवाकर ब्रह्मवाणी के भेद जाने। इस प्रकार प्रचार-प्रसार किया गया।

मल्का हांस (ज़िला मिंटगुमरी वर्तमान में पाकिस्तान) में पँजाब में ही एक सिख संत विद्धान ब्रह्मज्ञानी भाई दरबारा सिंह जी महाराज निवास करते थे। (इसी स्थान पर प्रसिद्ध सूफी-संत सय्यिद वारिस शाह ने अपने पीर मुर्शिद के निर्देश पर ''हीर'' नामक सुप्रसिद्ध ग्रंथ की रचना की जो कि पंजाब की एक अनमोल विरासत है। एवं आज भी सरहद (सीमा) के दोनों तरफ इसको सूफियाना कलाम के रूप में गायन किया जाता है।) पाक पट्टन में नानकपंथी ब्रह्मज्ञानी संत टहल दास निवास करते थे, दोनों ही संत बहुत निष्काम भक्ति-भाव रखते थे। तथा सदैव प्रीतम मिलन के लिए आतुर रहते थे। सिख संगत पर भी इनका बहुत अध्यात्मिक प्रभाव था। यथाः-

**''कोई आन मिलाऊ मैंनू प्रीतम पियारा ताथे जिंदड़ी बिकाऊ''**

संयोगवश एक बार ब्रह्मज्ञानी दर्शन भगत जी से मिलने पर यह दोनों महान ब्रह्मज्ञानी संत अत्यंत प्रभावित हुए। भगत जी भी इनकी रहनी से अत्यंत प्रभावित हुऐ तथा

इन से प्रतिदिन तारतम ज्ञान रूपी ब्रह्मज्ञान की आनंददायक चर्चा करते रहते। एक दिन एकांत में उन्होने भाई दरबारा सिंह जी को तारतम ज्ञानरूपी ब्रह्मवाणी क़ुल्ज़म स्वरूप साहिब की एक चौपाई के तीन चरण कहे और खामोश (चुप) हो गए। यथा:-

**या कुरान या पुरान, ए कागद दोऊ परवान।**
**याके मगज़ मायनें हम पास,----------।**

तब भाई दरबारा सिंह जी ने ब्रह्मज्ञान की इस चौपाई को सुनकर विनम्रता से कहा कि भगत जी! यह ब्रह्मज्ञान तो बहुत ऊँचा है। परंतु हमने सुना है कि जो भी चौपाई, छंद व दोहा होते हैं उसके चार चरण होते हैं। इस ब्रह्मज्ञान में चौपाई का चौथा चरण नही है। कृपा करके हमसे अंतर (भेद) न करो तथा पूर्ण ब्रह्मज्ञान निसंकोच कहो।

अब दर्शन भगत जी बोले कि आगे तो हमने भी नहीं सुना है। तब दरबारा सिंह जी ने प्रीतम के विरह में व्याकुल होकर कहा कि हम से अंतर न कीजिए। दोनो ही संतो के परमधाम की वासना होते हुए भी दर्शन भगत जी ने उन्हें जाहेरी (प्रकट) ब्रह्मज्ञान का भेद नहीं बताया तथा कहा कि इस अलौकिक ब्रह्मवाणी के भेद तुम्हें श्रीजी की मुखवाणी कुल्जुम् सरूप साहिब ग्रंथ में मिलेगा। इसी कारण उन्होंने वही पर ब्रह्मवाणी क़ुल्ज़म सरूप साहिब को चबूतरे पर ही आदर-सत्कार पूर्वक पधराकर ब्रह्मज्ञान तारतम्य का निज-आनन्द लिया तथा चौपाई का चौथा चरण समझाया कि **''अन्दर आए खोले प्राणनाथ''।** तब दोनो संतो ने श्रीजी के स्वरूप क़ुल्ज़म साहिब के हुजूर में शीश झुकाकर भगत जी

से तारतम रूपी ब्रह्मज्ञान ग्रहण कर लिया।

अब एक दिन दर्शन भगत जी जस्सू भगत के यहां पर पधारे, तो वह सुंदरसाथ में मायावी विकार अर्थात मिथ्या ऊँच-नीच का भेदभाव, मान-अपमान निंदा-चुगली के अत्यंत जोरावर (अधिकता से प्रचलित) होने से उदास हो गये। फिर वहां से चलकर मल्का हांस में आकर दरबारा सिंह जी को मिलकर अत्यंत प्रसन्न हुए क्योंकि इसी तन से अब यहां पर ही जागनी लीला धाम-धनी श्रीजी द्वारा होनी निश्चित थी।

इसके बाद दर्शन भगत जी ने अनेकों प्रकार से पँजाब की जागनी लीला पूर्ण की। किंवदंती है कि एक बार भगत जी का भतीजा अचानक परलोक सिधार गया तो परिवार वालों ने अत्यंत कटु वचन कहे। परिणामत: भगत जी उदास हो गये, तो भैया जी ने कहा कि आप अपनी आयु दे दीजिए तो यह जीवित हो जाएगा। तब भैया भगत जी ने अपनी आयु के कुछ माह रखकर शेष वर्ष दे दिए। तब वह पुन: जीवित हो गया। निश्चित समय अंतराल पर भैया सीताराम जी व दर्शन भगत जी का धाम गमन हो गया। आज भी इनकी समाधि को पीर की क़ब्र मानकर पाकिस्तान में दिया जलाया जाता है। कहा जाता है कि भैया सीताराम जी की समाधि एक ईंटों के भट्ठे के पास बनाई गई थी। अत: पुजारी जी को भैया जी प्रतिदिन स्वप्न में कहते कि भई। हमें यहाँ पर भट्ठे की ईटों के पकाने के कारण गर्मी लगती है। अत: हमें यहाँ से निकालकर या तो दूसरे स्थान पर समाधि दीजिए अथवा पन्ना जी भेज दीदिए। जब समाधि को

खोदकर देखा गया तो भैजा जी यथावत पाए गए। तब हिंदू-मुस्लिम सभी ने प्राणनाथ व भैया जी का जयधोष किया। पुनः दूसरे स्थान पर समाधि बनाई गई। तत्पश्चात् वह अपने निज़ स्वरूप का मूल-मिलावे में ध्यान-चितवन करते हुए एवं ब्रह्मज्ञानीभाई दरबारा सिंह जी को तारतम ब्रह्मज्ञान के भेद कहकर समाधिस्थ हुए।

भाई दरबारा सिंह जी पर भी धाम-धनी की बहुत मेहर (कृपा) हुई तथा धाम-धनी ने उनके धाम हृदय में विराजमान होकर पँजाब में जागनी-लीला की। ब्रह्मवाणी के अनेकों भेद उनके तन से भी ज़ाहिर हुए। जागनी लीला के अन्तर्गत कलियुग ने अत्यंत शोर-शराबा किया, लेकिन धाम-धनी की ब्रह्मवाणी की गूँज में उसका कोलाहल दब गया। लेकिन फिर भी कलियुग अपने मायावी अस्त्र-हथियार अर्थात् आपसी निंदा-चुगली में लगा रहा। इसी कारण से आज भी अनेकों सुंदरसाथ मिथ्या निंदा-चुगली रूपी वाद-विवाद में अपने जीवन का अमूल्य समय नष्ट करते हैं एवं अपने परमधाम के मूल सुखों की अनूभूति का निज-आनन्द निरंतर नहीं प्राप्त कर पाते हैं।

इस प्रकार पंजाब से कलियुग को ब्रह्मज्ञान रूपी तारतम ज्ञान से नष्ट करके धाम-धनी श्रीजी साहिब ने ब्रह्मज्ञानी भाई दरबारा सिंह जी के द्धारा पंजाब में कई महत्वपूर्ण स्थान बनवाये तथा सुंदरसाथ जी की माया में विस्मृत सूरताओं को श्री जी साहिब के स्वरूप की पहचान कराकर आत्म-जागनी प्रदान की तथा ब्रह्मवाणी को ज़ाहिर (प्रकट) कराया। अंततः भाई सरदार दरबारा सिंह जी के

द्वारा टहल दास महात्मा जी को भी ब्रह्मज्ञान के भेद प्राप्त हुए जिन्होंने पंजाब में ब्रह्मवाणी के प्रचार-प्रसार में अपना अमूल्य योगदान दिया।

ब्रह्मज्ञानी भाई दरबारा सिंह जी ने अनेकों सुंदरसाथ जी को जागृत किया। जब एक दिन धर्म प्रचार के लिये मल्का हाँस के देहात में हांस पधारे, वहाँ पर बाबा दयाराम जी नाम के एक नानक पंथी उदासी संत सदैव भजन-कीर्तन सत्संग ध्यान इत्यादि में लीन रहते थे। वह बचपन से ही परब्रह्म प्रियतम को खोज रहे थे। उन्होंने अनेकों साधु-संतों की भी सेवा की लेकिन किसी से भी प्रियतम परब्रह्म स्वामी से मिलन की राह प्राप्ति नही हुई। इस कारण प्रियतम मिलन की खोज पूरी न हो सकी। खोजते-खोजते एक दिन अचानक उनकी मतवाल राय से भेंट हुई। उनके साथ सत्संग करने से मन को कुछ करार (आन्नद) आया, तब वहां से वह पाक पट्टन आये। वहां से मल्का-हाँस ब्रह्मज्ञानी भाई दरबारा सिंह जी से तारतम ब्रह्मज्ञान का निज-आन्नद पाकर बहुत प्रसन्न हुए। यथा:-

**खोज बड़ी संसार रे तुम खोजो साधो, खोज बड़ी संसार।**
**खोजत-खोजत सतगुरू पाइए, सतगुरु संग करतार।।**

(किरंतन 26/1)

ब्रह्मज्ञान के रस में विभोर होते देख ब्रह्मज्ञानी भाई सरदार साहिब जी ने पूछा कि आप तो मिथ्या संसार में उदासीन संत रूप में रहते हुए नानक पंथी घर की सेवा करते हैं। क्या वहाँ पर ब्रह्मज्ञान का रस नही मिला? तब बाबा दयाराम जी ने कहा! वहां पर भी बहुत कुछ है। लेकिन

बिना निस्बत के कुछ भी मिलता नही है। महाराज जी! अब मैंने आपके चरण पकड़ लिये हैं। आप चाहे तो बाँह पकड़कर भव सागर से पार करें अथवा संसार के बीच मंझधार में छोड़ दें। तब भाई दरबारा सिंह जी ने हंसकर कहाँ! भाई हाथ छुड़ाने के लिये नही पकड़ा जाता है। परब्रह्म की प्राप्ति सत्य सद्गुरु की कृपा से ही संभव है। आप अवश्य इस लायक (योग्य) हैं। अतः अभी जाकर आप आराम कीजिए। तत्पश्चात् अलौकिक ब्रह्मज्ञान का चिंतन-मनन, चर्चा-अर्चा एवं ध्यान-चितवन कीजिए। यथाः-

**सतगुरु साधो वाको कहिए, जो अगम की देवे गम।**
**इन उल्टी से उल्टाए के, पिया प्रेमें करे सम्मुख।।**

(किरंतन 4/12/13)

तब बाबा दयाराम जी बोले कि भाई सरदार साहिब जी! आप हमसे कोई भी अंतर (भेद) न कीजिये। कृपा करके हमें भी अनंत ब्रह्मज्ञान का रसपान करा दीजिए जिससे आत्मा को निज आन्नद प्राप्त हो।

क्योंकि आज तक जितने भी महापुरुष हुए हैं, उनका अलौकिक संदेश मुझे याद (स्मरण) है। तब भाई दरबारा सिंह जी ने प्रसन्न होकर बाबा दयाराम जी को ब्रह्मज्ञान रूपी तारतम ज्ञान प्रदान किया तथा उनकी सुरता को मूल मिलावे में विराजमान मूल स्वरूप की याद कराई और इनका धाम-धनी के साथ नाता जोड़ दिया। अर्थात् मिथ्या माया-संसार से भिन्न परब्रह्म प्रियतम स्वामी के सम्मुख दिए यह वचन स्मरण करा दिया।

**जो तू भूले मैं तुझको, देऊंगी तुरंत जगाए।**

**मैं भूलों तो तूं मुझे, पल में दीजे बताए।।**

(ख़िल्वत 11/44)

तब धाम-धनी स्वरूप सतगुरु की मेहर से बाबा दयाराम जी को तुरंत ही यह याद (स्मृति) आ गई कि ब्रज व रास में मेरी ही वासना का नाम केसर बाई था। हमारे मूल तन परमधाम के मूल मिलावे में धाम-धनी श्री राज-श्यामा जी के सम्मुख विराजमान हैं। उनको-परमधाम के सभी निज-आनंद के रहस्य धाम-धनी की मेहर से प्रकट हो गये। तत्पश्चात् भाई सरदार जी का भी धाम गमन हो गया।

अब आप बाबा जी भी साक्षात् दया के समुद्र होकर इल्म-ए-लदुन्नी(ब्रह्मज्ञान) का खज़ाना प्रकट करने लगे। आपकी पवित्र जुबान (जिह्वा) से अमृतमयी ब्रह्मज्ञान की वर्षा होने लगी। ब्रह्मवाणी व शास्त्रों के भेद सुनकर बड़े-बड़े विद्धान, व्याकरणाचार्य भी नतमस्तक हो जाते एवं मुस्लिम आलिम (विद्वान) काज़ी-मुल्ला मौलवी कतेब पक्ष क़ुरान पाक के रहस्यों की चर्चा सुनकर लाज़वाब (निरुत्तर) हो जाते थे।

जब बाबा जी परमधाम के मूल मिलावे में श्रीराजजी के चरणों में विराजमान अलौकिक वहदत (एकदिली) के अपने मूल स्वरूप का चितवन करते, तो उन्हें अपनी देह की सुध-बुध न होती अर्थात सुरता अखण्ड अलौकिक दिव्य परमधाम में विचरण करके अनंत अखंड आनन्द को प्राप्त करती थी। यही वह सीधी राह है जिस पर चलकर बड़े-बड़े परमहंस सिद्ध हो गये तथा जिसके लिये अनेकों सूफ़ी पीर-फकीरों, ऋषियों-मुनियों ने अपनी देह को साधना-तपस्या

मे लगाया लेकिन परमधाम के अनमोल ब्रह्मज्ञान को निस्बत सबंध न होने से पूर्ण परम पद को प्राप्त नहीं कर सकें।

अतंत: बाबा दयाराम जी ने तारतम ज्ञान रूपी ब्रह्मज्ञान अर्थात् क़ुल्ज़म स्वरूप साहिब ग्रंथ का प्रचार-प्रसार समस्त पँजाब में जोर-शोर से किया। फिर वहां से गाँव कबीर वाला, मल्काहांस में आ गये तथा श्रीजी साहिब प्राणनाथ जी की ब्रह्मवाणी क़ुल्ज़म स्वरूप साहिब का प्रचार-प्रसार अत्यंत उत्साहपूर्वक किया तथा अनंत सुंदर साथ को जागृत किया। तत्पश्चात् सौ साल की उम्र में स्वयं ही जीवित समाधि ले ली।

देश विभाजन में भारत-पाकिस्तान बनने के बाद उनकी गद्दी भी कानपुर व करनाल में स्थापित की गई। जहाँ पर आज भी प्रत्येक वर्ष मेला-भंडारा एवं सत्संग होता है। जब कि गाँव कबीर वाला, मल्का हाँस, ज़िला मिण्टगुमरी पाकिस्तान में आज भी मुस्लिम समुदाय उनको एक बुलंद पीर (महान सदगुरु) मानकर अकीदत (श्रद्धापूर्वक) से उनकी दरगाह (समाधि-स्थल) को (अगरबत्तियों) की भीनी-भीनी सुगंध से महकाता है।

**परमहंस महाराज राम रतन दास जी की जागनी लीला**

उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जनपद में ननौता अंतर्गत जड़ौदा पांडा नामक ग्राम में विक्रमी संवत 1951 वैशाख माह की चतुर्थी को शुभ मिथुन लगन में (ईस्वी सन् 1894) में पंडित छज्जू दत्त जी के यहाँ एक तेजस्वी अनुपम बालक का जन्म हुआ। जिसका नामकरण पंडित झण्डू दत्त किया गया। (यह प्रसिद्ध दत्त ब्राह्मण वह समुदाय है जो कि

पैगंबर मुहम्मद साहिब के नवासे हज़रत अली के सुपुत्र इमाम हुसैन साहिब पर ख़लीफ़ा यज़ीद द्वारा अत्याचार करने पर इस अन्याय का प्रतिकार करके धर्मरक्षार्थ हेतु इमाम हुसैन साहिब एवं 72 परिवारी जन के आत्म-बलिदान पश्चात दत्त बाह्मणों ने भी अन्याय के विरूद्ध धर्म संघर्ष किया। अतः इतिहास में यह समुदाय दत्त हुसैनी ब्राह्मण कहलाता है। शिया संप्रदाय द्वारा इनको अत्यंत आदर-सम्मान प्रदान किया जाता है क्योंकि इस संप्रदाय ने निःस्वार्थ प्राणोत्सर्ग के मार्ग पर चलकर परम सद्गति को प्राप्त किया) बचपन में ही इनके पिता जी का देहान्त हो जाने से अल्पायु में ही उन्हें अपने छोटे भाई बुद्धिदत्त जी के साथ भयंकर दुर्दिन देखने पड़े। गाँव में फैली महामारी के कारण माता जी भी दवा व अन्न के अभाव में काल के गाल में समा गईं अर्थात् मोक्ष रूपी मृत्यु को प्राप्त हुईं। तत्पश्चात कुछ समय ताऊ एवं बुआ ने अबोध, अनाथ व असहाय दोनों बालकों का लालन-पालन किया।

मात्र 15 वर्ष की अल्पायु में ही आप की शादी कर दी गई एवं अगले वर्ष माया के पाश(बंधन) हेतु उनके यहाँ एक कन्या ने भी जन्म ले लिया। महाराज जी को तो संसारिक मोह से विरक्ति हो गई।

परब्रह्म प्रियतम स्वामी को पाने की जिज्ञासा के लिये ही आपने स्वयं घर-परिवार को त्याग दिया एवं सत्य ब्रह्मज्ञान की खोज मे घर से अकेले निकल पड़े। भूखे-प्यासे रहकर गाँवों, जंगलो, शहरों में विचरण करते रहे। एक बार ब्रह्मविद्या प्राप्त करने के लिये काशी अर्थात् बनारस की एक

पाठशाला में भी देव वाणी (सँस्कृत) का ज्ञान अर्जन करने के उद्देश्य से भी गये। परन्तु आठ दिन तक विद्यालय के दरवाज़े से ही कोई अलौकिक शक्ति उन्हें वापस लौटा देती थी। नौवें दिन एक तेजस्वी ब्रह्ममुनि ब्राह्मण के रुप में श्रीराज जी ने दर्शन देकर प्रबोध (ज्ञान) दिया कि लौकिक सँस्कृत का ज्ञान प्राप्त करने से क्या लक्ष्य प्राप्त होगा? यदि परलौकिक अर्थात् ब्रह्मज्ञान प्राप्त करोगे तो आत्मा जागृत होगी एवं परब्रह्म का ब्रह्मानंद सहज ही प्राप्त करोगे।

अत: आप ने वहाँ से वापस प्रस्थान किया एवं द्धारिका पुरी (गुजरात) में पहुंचे। एक रात्रि ध्यान (चितवन) में बैठे थे, तो दूर कहीं से कीर्तन की आवाज़ सुनाई देने पर उनका मन भी सुरीली आवाज की और आकर्षित हो गया। तब उनको श्रीराज जी की प्रत्यक्ष डांट-फटकार पड़ी। अंतत: वापस चितवन ध्यान में पूर्णतया तल्लीन हो गये।

महाराज जी को साधना काल में ही एक महात्मा ने अनोखा ज्ञान देते हुए कहा था कि चार चीज़ों का सदैव के लिए त्याग कर देना। यथा:-

1. अधिक वस्तुओं का संग्रह कभी न करना
2. महात्माओं की संगत में हमेशा रहना
3. दूध,दही,घी,इत्यादि पदार्थो का सेवन न करना
4. परस्त्री से एकान्त में कोई भी वार्तालाप न करना

कयोंकि सन्यास की एक अवस्था यह भी है कि एकान्त में रहकर परब्रह्म प्रियतम स्वामी की प्रेम-साधना की जाए। कभी भी लौकिक भौतिक संकटों-परेशानियों से विचलित नही होना चाहिए। मन ह्रदय में सदैव यह भाव रहना चाहिए कि हमें परब्रह्म प्रियतम के साक्षात्कार-दर्शन

का सौभाग्य कब प्राप्त होगा?

यहीं आपने साधु-संगत समूह में एक महाराज जी की बहुत प्रशंसा सुनी, तो आप स्वयं द्धारिका से चलकर सोनगीर महाराष्ट्र पहुँचे। वहाँ पर स्थित एक श्रीराम मंदिर में ठहर गये। जहां एकान्त में आठ-आठ घंटे तक ध्यान-चितवन करते रहते थे। एक दिन चितवन (ध्यान) में अचेतना बढ़ने के कारण शरीर निष्प्राण होकर एक ओर लुढ़क गया। तब लोगों का कोलाहल (शोर) मचा! कि मंदिर में किसी साधु ने प्राण त्याग दिये हैं। अत: सभी दयालु भक्त जन चंदा एकत्र करके उनको निर्जीव देह समझकर दाह संस्कार का प्रबंध करने लगे। संयोग से तब परमहंस ब्रह्ममुनि सदगुरु श्री नारायण दास महाराज जी वहां पर आए एवं महाराज जी की नाड़ी देखकर कहा कि यह साधु मृत नहीं है बल्कि योग-समाधि की गहन अवस्था में है। अत: उन्होने गुलाब जल छिड़क कर दिव्य तारतम ज्ञान का उच्चारण किया एवं घर से औषदि मंगवाकर गुलाब-जल में मिलाकर महाराज जी को दी। अंतत: महाराज श्री तुरंत सावचेत हो गये। श्री राम मंदिर में ही सदगुरु मिलन उपरांत आपको नया नाम ''राम रतन'' प्रदान किया गया। आप से सद्गुरु महाराज जी भी अत्यंत प्रभावित हुए एवं उनको तारतम रूपी ब्रह्मज्ञान (तारतम ज्ञान) प्रदान किया जिससे आपको परमधाम लीला एवं निज स्वरूप की स्मृति हो गई। तब अपने सदगुरु महाराज श्री के आदेश अनुसार महाराज जी आबादी (नागरिकों) के कोलाहल से दूर एक निर्जन मंदिर में रहने लगे। सदगुरू महाराज प्रतिदिन स्वयं महाराज जी को मिलने के लिए वहां पर आते एवं ब्रह्मज्ञान की अलौकिक रहस्यमयी

बातें उनको समझाते।

इस प्रकार चार महीने बीत गये। चितवनी द्वारा परब्रह्म प्रियतम की अनुपम लीला के अनंत अनुभव आपको होने लगे। कभी-कभी विचित्र आवाज़ें भी सुनाई देती थी। साँप-बिच्छू शेर-बाघ एवं चीते जैसे जहरीले प्राणी भी महाराज जी के आसन के पास आकर निश्चिंत होकर निद्रामग्न हो जाते थे। अतः उनकी निर्मल रहनी देखकर श्रीराज ने उनको प्रबोधित किया कि आप परमधाम की वासना रतनबाई हैं। (बिहारी जी महाराज में भी रतन बाई की आत्म के रूप में आपने ही आन्नद-रमन किया।) बृज रास लीला पश्चात पुनः संसारिक लीला मात्र की इच्छापूर्ति हेतु संसार में आए हैं। तब एक दिन महाराजश्री को सद्गुरु महाराज जी ने ग्राम (गाँव) में एक एकान्त स्थान पर बुलवा लिया।

महाराज जी का अधिक समय चितवनी एवं ब्रह्मज्ञान के चिंतन-मनन में ही बीतने के कारण आपकी अंतर्मुखता में निरंतर वृद्धि होने लगी। ऐसा प्रतीत होता कि साक्षात् सद्गुरु महाराजश्री स्वयं आपके धाम हृदय में विराजित हैं। मन में किसी भी प्रश्न के आने पर स्वयं अंतर्मन से सदगुरु महाराज प्रत्युत्तर प्रदान करते थे।

एक दिन गाँव में एक औरत के रोने की आवाज़ सुनाई देने पर मालूम (ज्ञात) हुआ कि किसी विधवा स्त्री के एकमात्र पुत्र की सर्पदंश (सांप के काटने) से अकाल मृत्यु हो गयी है। महाराज जी ने करुणा के वशीभूत होकर कहा कि सुबह तक इसका दाह-संस्कार कर्म न करना, बाकी सब सद्गुरु महाराज भला (उत्तम) करेंगे।

प्रात: काल बालक के सचेत एवं स्वस्थ होने पर पूरे गाँव मे महाराज जी के भौतिक चमत्कार की चर्चा प्रसिद्ध हो गयी। सदगुरु महाराज ने बुलाकर डांट-फ़टकार लगाकर कहा कि अब आप मुर्दों को भी जीवित करने लगे हो? आपको प्रकृति के विधान में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

अत: किसी प्राणी को इस जीव के प्रतिफल में प्राण त्यागने होंगे। तब महाराज जी ने नम्रतापूर्वक प्रत्युत्तर दिया कि मैं स्वयं ही प्रतिफल मे प्राण त्याग करुँगा। सद्गुरु के आदेश से स्नान-ध्यान से निवृत्त होकर स्वयं चादर लेकर लेट गये। परंतु आपके तन से जागनी लीला हेतु संयोग से कारज-वश कुछ समय पश्चात ही दैवयोग से सद्गुरु महाराज जी के पुत्र का देहान्त हो गया।

सदगुरू महाराज जी के आदेश अनुसार चितवन करते हुए कुछ पल की अचेतना के पश्चात साक्षात परब्रह्म प्रियतम ब्रह्मानंद स्वरूप (सद्गुरु रूप में) श्रीराजजी का दर्शन प्राप्त हो गया। श्रीजी ने आपको संसार में अवतरित विस्मृत ब्रह्ममुनियों की आत्म-जागनी के कार्य का आदेश दिया। तब सदगुरु महाराज ने स्वयं उनको श्वेत उज्जवल वस्त्र धारण करने के लिये प्रदान किए एवं पद्मावती पुरी परना धाम (पन्ना जी) में जाकर गुम्मट-बँगला साहिब में श्रीजी साहिब महमत प्राणनाथ जी का दर्शन करने का निर्देश दिया। फिर कुछ समय पश्चात ही परमहंस महाराज नारायण दास जी भी धाम पधारे अर्थात् योग निद्रा में समाधिस्थ होकर ब्रह्मलीन हो गए।

महाराजश्री ने पन्ना धाम पहुँचकर गुम्मट साहिब में

श्रीजी के साक्षात प्रत्यक्ष दर्शन करके वहां से प्राप्त श्री मुखवाणी स्वरुप क़ुल्ज़ुम साहिब जी को शिरोधार्य कर अर्थात सिर पर रखकर पैदल पद-यात्रा करते हुए अपने जन्म स्थान के गाँव जड़ौदा पाण्डा पहुँचे। वहाँ पर जूड़ में मंदिर के पास निवास करने लगे। मंदिर के पुजारी द्धारा ईर्ष्या-द्धेष के कारण एवं एकान्त में रहने की इच्छा से समीप ही शेरपुर गांव के जंगल में एक कुटिया बनाकर निवास करने लगे।

इस प्रकार निजानंद आश्रम शेरपुर की नींव पड़ी। तत्पश्चात सुंदरसाथ व ग्रामवासी एवं सुँदरसाथ जी वहां आकर अपनी आत्मिक खुराक अर्थात ब्रह्मज्ञान चर्चा श्रवण-मनन करने की जिज्ञासा पूर्ण करने लगे। यहाँ पर भी महाराजश्री ने अनंत चमत्कारिक लीलाओं का प्रकाश किया है। तत्पश्चात् अंतर्ध्यान होकर योग समाधि अवस्था को प्राप्त किया। वहाँ पर आज भी आप भौतिक चमत्कार की लीला कर रहे हैं जिससे कि सुंदर साथ एवं ग्रामीण अंचल के सरल हृदय गाँववासियों की आज तक भी परमहंस महाराज श्री जी में अटूट श्रद्धा व विश्वास कायम (स्थित) है।

## धर्मवीर ब्रह्ममुनि जगदीश चंद्र जी की जागनी लीला

कामिल (निपुण) मुर्शिद (पथ प्रर्दशक) अज़ीम (महान) हादी (सद्गुरु)सरकार साहब जागनी रत्न धर्मवीर श्री जगदीश जी का जन्म हड़प्पा ज़िला मिन्टगुमरी,पंजाब प्रान्त (वर्तमान में पाकिस्तान) में सन 5 फरवरी 1925 ईस्वी में धर्मपारायण माता-पिता श्रीमती माया बाई, श्री

काशी राम जी आहूजा के घर हुआ।

बारह वर्ष की अल्पायु में महाराज श्री मेहर दास जी से आपकी मुलाकात हुई। महाराज जी की रहनी से आप अत्यंत प्रभावित हुए। तत्पश्चात आप अपनी बड़ी बहन के यहाँ विद्या-अध्ययन करने के उद्देश्य से दूसरे नगर में आ गये।

यहीं पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की निष्काम सेवा से प्रभावित होकर आप जन सेवा में तल्लीन होकर चरित्र निर्माण एवं देशप्रेम की सेवा में समर्पित रहने लगे। इसी भावना से ओत-प्रोत होकर आप में समाज सुधार हेतु एक क्रान्ति की चिनगारी उत्पन्न हो गई। अनुशासन का प्रथम अध्याय भी आपने यहीं से पाया। सरकार साहब के लक्ष्य प्राप्ति में संघ का अनुशासनपूर्वक जीवन निर्वाह एक अचूक साधन बना। (आधुनिक युग में विभिन्न सँस्थाए धार्मिक वैमनस्य से ग्रसित है। वह पाप कर्म से नही अपितु पापी व उसके समस्त समुदाय पर ही अनुचित दोषारोपण करती है।) इसी समय गाँव के मंदिर में सुंदरसाथ के मध्य वर्ग-संघर्ष को शान्त करने के लिये जामनगर से महाराज धनीदास जी ने आकर माहौल को शांति-प्रिय बनाया। महाराज जी से भी आप अत्यंत प्रभावित हुए।

संयोग वश परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी ने पंजाब के विभिन्न ग्रामों व नगरों का दौरा (भ्रमण) किया तथा सुंदरसाथ को एक भविष्यवाणी द्वारा सावचेत भी किया कि आप को यह स्थान त्यागना पड़ेगा। अतः आप सभी निजानंद आश्रम शेरपुर में निवास करना, परन्तु सुंदर साथ

मिथ्या संसारिक माया-मोह के वशीभूत होकर वहीं रहते रहे।

तत्पश्चात सन् 1947 में हिंदुस्तान का विभाजन होने पर आप भी नवनिर्मित पाकिस्तान से अपने परिवार एवं असँख्य सुंदरसाथ के साथ असँख्य दु:खों को सहन-कर भारत पहुँचे।

अत: इलाहाबाद में नौकरी के दौरान भी आप शरणार्थीयों (पुरूषार्थीयों) की सेवा तन-मन से करने लगे। वहीं पर आपकी एक महात्मा जी से मुलाकात हुई। जिनसे कौतूहल एवं जिज्ञासावश आपने हनुमान जी के दर्शन करने की विधि ज्ञात की।

आप इलाहाबाद में गंगा नदी के किनारे साधना-रत हो गये। डेढ़ दिन-रात (36 घण्टे) पश्चात् अर्ध-रात्रि में लगभग 2 ढ़ाई बजे हनुमान जी ने साक्षात् दर्शन दिये एवं आपकी मनोकामना पूर्ण कर के सदैव आपके साथ रहने का वचन प्रदान किया।

आप अब भी सनातन धर्म सभा के सचिव पद के सेवा कार्यो में निस्वार्थ भाव से संलग्न रहते थे कि एक दिन जन्माष्टमी के सुअवसर पर सभा के अध्यक्ष हंसराज जी ने कहा कि श्री विष्णु भगवान जी की सेवा आपसे एक पल भी न छूटे। दैव योग से पराशक्ति द्वारा आपसे भी प्रत्युत्तर में कहला दिया कि

**नेति नेति जेहि वेद निरूपा, निजानंद निरूपाधि अनूपा,**
**शंभु विरंचि विष्णु भगवाना, उपजहिं जासु अंश थे नाना,**

(श्री रामचरित मानस, बालकाण्ड चौ. स०143-144)

अर्थात् परब्रह्म के परमधाम के एक अंश मात्र ही श्री विष्णु भगवान हैं क्योंकि त्रिदेवों (श्री ब्रह्मा, विष्णु, शंकर जी) की उत्पत्ति परब्रह्म के एक कण मात्र से हुई है। जबकि निजानंद स्वरूप परब्रह्म की महिमा तो अनंत है। अत: हमें नि:संदेह अद्वैतवाद के सिद्धान्त के अनुसार एक अविनाशी अलौकिक परब्रह्म स्वामी की ही पूजा अर्चना करनी चाहिए।

यह सुनकर हंसराज जी क्रोधित हो गये कि आपने श्री विष्णु भगवान जी के प्रति ऐसे वचन क्यों कहे हैं? अत: आपको प्रमाणित करना पड़ेगा कि धर्म-शास्त्रों में मूर्तिपूजा का निषेध है। अन्यथा सँस्था के सचिव पद को त्यागना पड़ेगा।

सभी ट्रष्टियों ने भी सामूहिक रुप से एक होकर प्रस्ताव पास किया कि आपको मुआफी (क्षमा) मांगनी चाहिये या फिर अपनी बात की प्रमाणिकता सिद्ध करनी पड़ेगी। आपने सभी से चालीस दिन का समय ले लिया। आप अपने माता-पिता एवं पत्नी के साथ समैया महोत्सव में भाग लेने एवं अपनी जिज्ञासा शांत करने हेतु गुम्मट बग्ँला दरबार साहिब श्री ५ पदमावती पुरी मुक्ति धाम-पन्ना (बुंदेलखण्ड), मध्य प्रदेश पहुँचे।

यहाँ पर आपने अपने एक मित्र से अपनी जिज्ञासा कही तो उन्होंने आपकी मुलाकात पंडित कृष्णदत्त जी शास्त्री से करवा दी। जिन्होने सरलता से आपको बोध करा दिया कि

**''द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च।**

**क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोक्षर, उच्यते।।**
**उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।**
**यो लोकत्रयमाविश्य विभर्त्यत्यय ईश्वरः।।**

(श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15, श्लोक सँख्या 16/17)

अर्थात् इस संसार में दो पुरुष क्षर ब्रह्म व अक्षर ब्रह्म हैं। क्षर नाशवान (जगत के स्वामी श्रीविष्णुजी भी आदि नारायण महाविष्णु के अंश हैं जो समस्त चौदह लोक अतल, वितल, सुतल तलातल रसातल, महातल एवं पाताल लोक से पृथ्वी (अंतरिक्ष) पितृलोक, जनलोक, तपलोक, स्वर्ग व बैकुंठ इत्यादि तक, पाँच तत्व रूपी पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, तीन गुण सत-रज-तम् एवं मन, चित बुद्धि अहंकार रूपी ऐसे मृत्युलोक के समस्त जीवों में समाहित हैं।) जबकि इससे भिन्न अविनाशी अखण्ड अक्षर ब्रह्म हैं। (जो सदैव सर्वदा जन्म अथवा मृत्यु के चक्र से भिन्न रहते हैं।)

(इन दोनों महाविष्णु जी एवं अक्षर ब्रह्म जी से भी सर्वदा भिन्न एक उत्तम पुरुष हैं तथा जो अनंत अखण्ड आनन्दमयी परमधाम में विराजमान हैं।) वह अन्य उत्तम पुरूष (पूर्णब्रह्म) ही इन तीनों लोकों अर्थात क्षर लोक, (मृत्यु-लोक) अक्षर धाम एवं परमधाम के वास्तविक स्वामी हैं। वास्तव में वही अविनाशी पूर्णब्रह्म परब्रह्म (या परमेश्वर कहलाने व पूजन करवाने के भी उपयुक्त अधिकारी) हैं। परन्तु तारतम्य (तारतम) ज्ञान न होने से विद्वान प्रायः क्षर (जीव) शरीर को, अक्षर आत्मा (जीवात्मा) को एवं उत्तम पुरूष परब्रह्म स्वामी परमेश्वर श्रीविष्णुजी को मान

लेते हैं एवं इसे पंच भौतिक शरीर पर ही इसको घटा लेते हैं जो कि अनुचित है। क्योंकि जीव व आत्मा सर्वदा भिन्न हैं। यदि कोई रात्रि के अंधकार को प्रकाश मानता है। तो क्या उजाला होगा? कभी भी नही।

तारतम्य (तारतम) ज्ञान के अतिरिक्त किसी भी विद्या (मंत्र) से परब्रह्म सच्चिदानंद के भेद सत-अक्षर, चित चेतन-परब्रह्म, आनन्द-शक्ति का विवेचन (ज्ञात) नहीं किया जा सकता है।

**ममैवांशौ जीवलोके जीवभूतः सनातनः।**
**मनः षष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थान कर्षति।।**

(श्रीमद्भगवत गीता, अध्याय 7/15)

अर्थात् भगवान का सूक्ष्म सनातन जीव रूप समस्त संसारिक प्राणियों में विराजमान (स्थित) है। वही मन पाँचो इंद्रियो को आकर्षित करता है। एवं ''**आत्मा च परमात्मा**'' जिस प्रकार सूर्य से किरणें, चंद्रमा से चाँदनी, सुमुंद्र से उसकी लहरें जुदा (भिन्न) नहीं हो सकती हैं, ठीक ऐसे ही आत्मा से परमात्मा कदापि कभी भी भिन्न नहीं हो सकता है। परन्तु विद्वान तारतम्य ज्ञान न जानने से भ्रमवश जीव व आत्मा को भिन्न न कहकर जीवात्मा कह जाते हैं। जबकि जीव अंधकार है। आत्मा प्रकाश है। तब विचार कीजिए! अंधकार एव प्रकाश कैसे एकत्र रहेंगे।

फिर महाराजजी ने कहा कि आप हमारी एक पुस्तक ''श्री निजानंद चरितामृत'' पढ़ लेना। बाकी सभी संशय भी श्री राज जी महाराज ठीक कर देंगे।

अतः अब आपको अखण्ड अलौकिक परमधाम व

परब्रह्म प्रियतम स्वामी के स्वरूप की पहचान बताने वाले सत्य पथ-प्रदर्शक सद्गुरु प्राप्ति की लगन (धुन) लग गई। कार्य-कारण से कुछ ऐसा संयोग बना कि श्री प्रणामी मंदिर करनाल में आने पर गद्दीनशीं महाराज जी से मुलाकात तो हुई परन्तु उन्होनें बाबा दयाराम जी के स्मृति-वार्षिकोत्सव पर परब्रह्म के दिव्य परमधाम के विषय में विशेष रूप से कोई व्याख्याँ नहीं दिया।

अंतत: अपनी पत्नी व बच्ची को साथ लेकर ननौता रेलवे स्टेशन पर उतरे। तत्पश्चात् वहाँ से पैदल ही नहर की पटरी पर असहनीय कष्टप्रद यात्रा करके आप जड़ौदा पाण्डा गाँव होते हुए दोपहर में शेरपुर के श्री निजानंद आश्रम में पहुँचे।

शेरपुर आश्रम के मुख्य द्धार के पास पहुँचते ही परमहँस महाराज सदगुरु श्री रामरतनदास जी ने प्रेमपूर्वक आपको गले लगा लिया एवं पूछा! कि और भी कोई पीछे है जो यहाँ पर आ रहा है? आपने कहा कि पत्नी एवं पुत्री के अतिरिक्त और कोई भी नहीं जिसका भाव यह है कि इस समय परिवार के अतिरिक्त और कोई भी साथी नही आया है। (भ्रमवश कुछ सुंदरसाथ इसका आशय यह समझते व समझाते हैं कि अब और कोई भी और जाग्रत करने या करवाने वाला न होगा। तो विचारिए! कि सरकार साहब ने क्यों जागनी अभियान प्रारंभ किया?) अत: आपने सद्गुरु महाराज जी के निर्देशानुसार खान-पान इत्यादि से निवृत्त होकर आराम (विश्राम) किया। अगले दिन प्रात: पति-पत्नी ने श्रद्धापूर्वक अपने संशयों का निवारण महाराज जी

से करने के पश्चात तारतम्य (तारतम) ज्ञान ग्रहण किया।

सद्गुरु महाराजश्री ने भी ज़ाहिरी मेहर की, तो दिल्ली में तबादला हो गया। अंततः आप गुड़गाँव में सपरिवार निवास करने लगे। पुनः अगले वर्ष के वार्षिकोत्सव में महाराजश्री से विनती करके आपने समस्त सुंदरसाथ की सेवा मांग ली। क्योंकि परमधाम में सुंदर साथ की सेवा प्राप्त नही होनी है। सेवा का प्रतिफल जागनी लीला में ही अनंत प्रेम व आन्नद देता है। तत्पश्चात सद्गुरु महाराज ने आपको सुपात्र परखकर ब्रह्मज्ञान की अनमोल निधि को प्रदान किया। यथाः-

**''तमे प्रेम सेवाएँ, पामसे पार''**

कार्य-कारण का संयोग इस प्रकार से बना कि एक बार सदगुरु महाराज जी आपको भी अपने साथ पहलगाम (कश्मीर) में यात्रा पर ले गए। और भी कई प्रमुख सुंदरसाथ इस यात्रा में सम्मिलित थे। तत्पश्चात परमहंस महाराज जी आपको अपने साथ लेकर एकान्त में चले गये एवं बाकी-शेष साथियों को दूसरे भौतिक-दैहिक कार्यो में लगा दिया। यथाः-

**''जाको लेत है मेहेरे में, ताए पेहेले बनावे वजूद''**

वहाँ पर ही एक दिन भ्रमण (यात्रा) के मध्य आपको महाराज जी ने निर्देश दिया कि जगदीश जी! विजया बूटी तो लेकर आइए। आपने तुरंत ही परमहंस सदगुरु की सदिच्छा का पालन किया। तब महाराज जी ने कहा कि आप भी इस विजया बूटी (देशी औषधि के रूप लिया जाने वाला एक निषिद् सेवन पदार्थ) का सेवन कर लीजिए। आपने भी

संकोचपूर्वक बूटी का प्रसाद ग्रहण किया।

अब बूटी का असर होने पर मद्होशी सी छाने लगी तथा सद्गुरु महाराज श्री रामरतनदास जी एवं युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी का स्वरूप एक ही दृष्टिगोचर होने लगा। तब महाराज जी ने कहा कि आप रात (रात्रि) को एकान्त में जो श्रीजी के साक्षात्कार हेतु जिनका (ध्यान) चितवन किया करते हो। अब उस दिव्य-अलौकिक परमधाम के अद्धैत स्वरूप परब्रह्म का प्रत्यक्ष साक्षात्कार कर लीजिए।

अंततः सद्गुरु महाराज की मेहर स्वरूप आपने देखा कि परब्रह्म स्वरूप सदगुरु महाराज मेरी सुरता के साथ अष्टावरण युक्त पाँच तत्व एवं तीन गुण अंतरिक्ष, चौदह लोक आकाश स्वर्ग, बैकुण्ठ, निराकार, निरंजन, अकाल पुरुष, ज्योति स्वरूप, गायत्री शक्ति, मोह सागर (अर्थात सात द्वीप-सात समुद्र) आदि नारायण, क्षर ब्रह्माण्ड को गोबच्छ के समान सहज रूप से पार करके गोलोक धाम, अखण्ड ब्रज की बाल लीला व रास लीला, अर्थात योग माया में योगिराज श्री कृष्ण जी के अखण्ड बालमुकुन्द व बाँके बिहारी जी के स्वरूप का साक्षात्कार दर्शन करके अखण्ड बेहद भूमि के पश्चात अक्षर धाम में अक्षर ब्रह्म का दर्शन करते हुए अखण्ड यमुना (जमुना) जी के मधुर, सुगन्धित, शीतल, पवित्र जल में स्नान करने के पश्चात जब बाहर आए तो एक सुंदर सखी का स्वरूप धारण कर लिया। जमुना जी के दूसरी तरफ़ (पार)अखण्ड आनन्ददायक दिव्य अलौकिक परमधाम की सवारी स्वरूप दो अलौकिक उड़ने वाले अश्व (घोड़े) खड़े हुए हैं। उन पर बैठकर हम

आनन्दपूर्वक परमधाम में पहुँच गए। अब चाँदनी चौंक में जहा पर दो वृक्ष एक हरा दूसरा लाल रंग के पत्तो से शोभायमान है। दोनों अलौकिक अनुपम वृक्षो के मध्य से होकर एक सौ सीढ़ियाँ चढ़कर मूल मिलावे में पहुँच कर देखा कि दिव्य अलौकिक सिहांसन पर आप परब्रह्म स्वरूप सदुगरु साक्षात विराजमान हैं। उस दिव्य सद+चिद+आन्नदमयी धाम-धनी श्री राज श्यामा जी का प्रत्यक्ष साक्षात्कार करते ही सुरता को अनंत अलौकिक आनंद की अनूभूति हुई। अंततः धाम-धनी स्वरूप सदगुरु एवं सखियों की सुरताओं का एक रूप-स्वरूप एक ही हो गया।

फिर समस्त अलौकिक परमधाम में भ्रमण करते हुए वन, फल-फूल एवं यमुना जी का महलों के नीचे से प्रवाह, मेवेदार वृक्षो एवं वनों के बीच में ढंपी हुई (अंडर ग्राऊँड) व खुला यमुना जल प्रवाह, हौज़-कौसर का तालाब, जिसके किनारे बहुमूल्य रत्न-आभूषणों एवं दिव्य नगों लाल, मणि से सुसज्जित है। माणिक पहाड़, पश्चिम की चौगान, पुखराज पर्वत, आठ सागर और आठ तटों को आत्मदृष्टि से प्रत्यक्षतः साक्षात्कार किया। यथाः-

**''धाम तालाब कुंजवन सोहे, मानिक नहरें वन की जोहे, पश्चिम चौगान, बड़ो वन कहिए, पुखराजी, जमुना जी लहिए, आठों सागर आठ जिमीं ये, पच्चीस पक्ष हैं धाम-धणी के''**

तत्पश्चात् पुनः वापस संसारिक तनों के अपने स्वरूप में पहुंच गए। तब तन-मन की निर्मलता स्वरूप स्वयं ही हृदय परमहंस महाराजश्री के प्रति समर्पित हो गया। क्योंकि

महाराज जी मेहर से वह सब कुछ सहज व सरलता से ही प्राप्त हो गया जिसके लिए अनंत ऋषि-मुनियों, सूफी संतों, पीर-पैगंबरों, अवतारों इत्यादि ने अनेकों कष्टप्रद साधनाएं की, तब कही जाकर एक कण मात्र का ज्ञान हुआ।

अब महाराजजी के प्रति आपका सेवा भाव अत्यंत सुदृढ़ हो गया अपने आपको पूर्णतया सद्गुरु महाराज जी की सेवा में अर्पित कर दिया। एक दिन दिल्ली में प्रवास के दौरान महाराज जी ने पुल बंगश के मंदिर में बीतक साहिब की श्री मुखचर्चा करने का निर्देश देते हुए अपना रूमाल आपके सिर पर सुशोभित करके धाम-धनी प्राणनाथ जी की साक्षात मेहर को आपमें आत्मसात करा दिया। अब ब्रह्मवाणी के रहस्य दिन-प्रति दिन उजागर होने लगे तथा सुंदरसाथ जी भी अमृतमयी ब्रह्मज्ञान स्वरूप ग्रंथ कुल्जुम साहिब का रसास्वादन करके धन्य होने लगे।

तत्पश्चात एक दिन दिल्ली में श्री एच. के. एल. भगत जी की माडॅल टाऊन कोठी पर महाराज जी श्री ५ पदमावती पुरी धाम पन्ना पहुँचने से पूर्व कुछ समय विश्राम के लिए आए एवं आपको अपने समीप बुलाकर स्नेहपूर्वक समस्त अमूल्य अध्यात्मिक निधि एवं माया संसार में विस्मृत (भ्रमित) सुंदरसाथ जी को जागनी (प्रबोध) करने का निर्देश देकर महाराज जी योग निद्रा में समाधिस्थ हो गये और अपनी जागनी लीला के परमधाम (परना धाम) सिधारे। आपने सद्गुरु महाराज जी की भव्य समाधि शेरपुर आश्रम के प्रांगण में बनवाई। जो कि आज भी सभी के लिए पावन-श्रद्धा का स्थान है।

आपने अपनी निष्काम सेवा से अपने सद्गुरु को रिझा लिया था। परिणामतः सदगुरु ने भी आपको अपना वास्तविक उत्तराधिकारी बनाकर सुंदरसाथ जी की जागनी का कार्यभार सौंप दिया एवं परमहंस रामरतनदास महाराज जी की पुण्य स्मृति में प्रतिवर्ष आज भी परम्परा स्वरूप रतनपुरी आश्रम में वार्षिकोत्सव मनाया जाता है। आपने तन, मन, धन से सदगुरू जी को रिझा कर प्रसन्न कर लिया था, तो सद्गुरु जी ने भी आपको अपनी मेहर में ले लिया।

पन्ना धाम के शरद पूर्णिमा महोत्सव में मंच पर आपने यह निर्भीकतापूर्वक घोषणा की कि श्री प्राणनाथ जी शरीरिक नहीं बल्कि एक अध्यात्मिक नाम है। इसका आशय है कि आत्मा का प्रीतम अथवा प्राणों का स्वामी अक्षरातीत परब्रह्म स्वरूप विजयाभिनंद बुद्ध निष्कंलक अवतार है। अतः परब्रह्म का कोई भी भौतिक गुरु नही हो सकता है। क्योंकि कथन है कि-

**''जो पूत किसी का होत है, सो साहिब किसी का नही।**
**जो साहिब सबका होत है, वह पूत किसी का नही।''**

उपर्युक्त संक्षिप्त वर्णन द्वारा धर्मवीर जागनी रतन सरकार साहब के धार्मिक क्रिया-कलापों का वर्णन किया गया है जो कि सुंदरसाथ को प्रेरणा, अनुशासन व निर्देशन अर्थात माया में सुंदरसाथ जी को रहनी का महान दिग्दर्शन प्रदान करते हैं। यथाः-

**''कहनी कही सब रात में, आया फैल हाल का रोज़''**

(ख़िल्वत 5/6)

**''रहनी रूह पहुँचावही, कहनी लग रही नाम''**

क्योंकि केवल धाम-धनी श्री राज जी ही जागृत अवस्था
में हैं अत: केवल वही जागनी-लीला कर सकते हैं। तन की शोभा किसी को भी दें। अन्यथा श्री देवचंद (श्यामा) जी ने भी तो कितना प्रयास किया कि जागनी उनके तन से हो, परन्तु शोभा केवल मेहराज ठक्कर जी के तन को ही मिली। धाम-धनी ने तो पहले ही से सब कुछ निश्चित किया हुआ है। यथा:-

**पहले हक़ ए दिल में लिया, पीछे आए माहें नूर।**
**ता पीछे हादी रूहन में, यों कर हुआ ज़हूर।।**

(बड़ी अर्जी)

इसीलिये तो सद्गुरु देवचंद जी ने अपनी पाती में मेहराज जी को स्पष्ट रुप से लिखा था कि बारहवीं सदी के बाद डेढ़ सौ वर्ष तक अर्थात् 1350 हिज़री सन् 1971 अर्थात ईस्वी तक श्री मुखवाणी स्वरुप क़ुल्जुम साहिब का अलौकिक ज्ञान संसार से छिपा रहेगा। अंतत: पुन: यह ब्रह्मवाणी समस्त विश्व में प्रचारित-प्रसारित होगी।

अत: सुदंरसाथ जी, हमें परमधाम का वचन (वायदा) कभी नही भूलना चाहिये कि -

**जो तू भूले मैं तुझको, देऊँगी तुरंत जगाए।**
**मैं भूलूं तो तू मुझे, पल में दीजो जगाए।।**

धर्मवीर जागनी रतन सरकार साहेब द्धारा श्री मुखवाणी क़ुल्जुम स्वरूप साहिब के परिप्रेक्ष्य में मुख्य प्रतिपादित सिद्धान्त ये हैं यथा:-

श्रीप्राणनाथजी का स्वरूप श्रीमुखवाणी कुल्जुम् साहिब ही माया रूपी संसार में सुंदरसाथ का एक मात्र आसरा है।
श्रीप्राणनाथजी जन्म-मरण, पाप-पुण्य, सुख-दु:ख इत्यादि मायावी विकारों से रहित हैं।
श्रीप्राणनाथजी किसी व्यक्ति मात्र का नाम नही बल्कि ब्रह्मत्माओ के प्रियतम स्वामी हैं।
श्रीप्राणनाथजी के गुरु देवचंद नहीं बल्कि मेहराज जी के सद्गुरु देवचंद जी हैं अन्यथा श्री प्राणनाथ जी का कोई संसारिक गुरु कदापि नही है।
श्री तारतम मंत्र नहीं, प्रियतम स्वामी से मिलन और प्रतिज्ञा है। यही जीवन का आधार है।
श्री तारतम ज्ञान को गुप्त न रखकर जन-जन के आत्म कल्याण हेतु अखिल विश्व में प्रचारित-प्रसारित करना है।
जागनी ब्रह्माण्ड में तारतम दो बार श्री देवचंद जी एवं मेहराज जी पर अवतरित हो गया है।
हमारे संप्रदाय का वास्तविक मूल नाम निजानंद है। संसारिक रूप में प्रणामी धर्म कहा गया है।
सद्गुरु आप स्वयं धाम-धनी अक्षरातीत परब्रह्म स्वरूप श्री जी साहिब, प्राणनाथ जी हैं।
पंच-भौतिक कर्मकांड से भिन्न पतिव्रता भाव की परब्रह्म प्रियतम से अनन्य प्रेम लक्षणा भक्ति ही सर्वोपरि है।
पवित्र क़ुरान व पुराण, ब्रह्मवाणी कुल्जुम सरुप की साक्षी हेतु ग्रन्थ है।
जागनी केवल जाग्रत श्रीराजजी महाराज ही करते हैं॥
(परमधाम में तो सभी सखियां एवं श्यामा जी भी फ़रामोश

(आवरण) में है।
हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन इत्यादि के भेद तन मात्र के हैं अन्यथा मूलतः आत्मा सबकी एक ही है।
आत्मा सदैव परमात्मा के साथ निवास करती है एवं जीव ही माया के कर्म भोगता है।
संसार में तन-मन-धन की सेवा के द्वारा ही अखण्ड आनन्द एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है क्योंकि परमधाम में सुंदरसाथ जी की सेवा नही होती है।
आत्म-जागृति के लिये अपने मन को निर्मल करना चाहिए क्योंकि खाली पात्र में ही कोई वस्तु आएगी।
श्रीकृष्णजी द्वारा ग्यारह साल एवं बावन दिन की गई लीलाएं योगमाया के ब्रह्माण्ड में क्रमशः बाल लीला बाल-मुकंद जी एवं किशोर लीला बांके-बिहारी जी के रूप में अखण्ड है।

**खेला जे सरूप ब्रज रास, नित वंरदावनों विच रमन किया।**
**नील वस्त्र ले कपड़े पहिरे तुर्क पठानी अमलु किया।**

(आसा की वार श्लोक न० 26)

श्रीकृष्णजी के रूप में अखण्ड रास लीला के पश्चात परब्रह्म शक्ति स्वरूप पुनः अरब में मुहम्मद साहिब के रूप में आख़िरी पैग़ंबर बनकर आये। यथाः-

**''रास लीला खेल के, आए बरारब में''**

(बीतक साहिब 2/8)

क़ियामत के सातों बड़े अहम् निशान के भेद प्रकट हुए हैं। यथाः-
1. असराफ़ील का (ब्रह्मज्ञान) सूर फूँकना

2. याजूज़-माजूज़ (दिन-रात) का प्रकटना
3. सूरज मग़रिब (पश्चिम से ब्रह्मवाणी) में उदय होना
4. हज़रत ईसा रूहुल्लाह (श्यामा जी) का पुनः संसार में अवतरण
5. आख़रूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज़्ज़माँ बकैउल्लाह (श्री विजयाभिनंद बुद्ध निष्कलंक अवतार) का प्रकटीकरण
6. मारिफ़त-हक़ीक़त (सत्य पहचान) के द्वारा दिग्दर्शन
7. क़ुरान, शफ़कत बरक़त (अध्यात्मिक ज्ञान) का उठना (एवं हिंदुस्थान भारत में पुनः स्थापना संसारिक प्राणियो पर ही अंततः घटते हैं।)

संसार में जागनी रास का मूल मिलावा गुम्मट साहिब श्री ५ पद्मावती पुरी धाम पन्ना सभी प्राणियों के लिए मोक्ष का केंद्र है।

श्री निजानंद संस्कार पद्धति पुस्तक द्वारा सुंदरसाथ में निजानंद-संप्रदाय के रीति रिवाज, परम्पराएं प्रचलित करना।

श्री मुखवाणी स्वरूप पवित्र क़ुल्ज़म साहिब के मंथन एवं अखण्ड पारायण करवाने पर बल देना जिससे संसार में श्रीजी के आत्म-जागृति हेतु तारतम्य ज्ञान का प्रचार-प्रसार व्रीवता से हो सके।

सुंदरसाथ जी को श्रीजी की ब्रह्म वाणी से सराबोर, तृप्त एवं आत्मसात करने हेतु पवित्र ग्रंथ स्वरूप क़ुल्ज़म एवं बीतक साहिब का सरल भाष्य अर्थगठन करना।

परमहंस महाराज सदगुरु रामरतनदास जी के नाम से इंचोली गाँव का परिवर्तित करके नया नाम रतनपुरी शासन से स्वीकृति लेकर नया नाम प्रचलित कर दिया।

श्री प्राणनाथ प्राथमिक, माध्यमिक, विद्यालय को लड़कियों हेतु स्नाातक स्तर तक की मान्यता प्रदान करवाना।
श्री निजानंद इंटरनेशनल सँस्थान द्वारा इंटरनेट पर श्री मुखवाणी का अंग्रेजी भाषा में प्रचार प्रसार करवाना।
इनसाइकलोपिडिया (धार्मिक विश्वकोष) में निजानंद संप्रदाय के सिद्धान्तों को सर्वोपरि प्रथम स्थान प्रदान करवा दिया।
इलैक्ट्रोनिक मीडिया द्वारा श्री प्राणनाथ जी वचनामृत श्री मुखवाणी का संदेश जन-जन में जी.टी.वी. द्वारा प्रसारित करवाना इत्यादि।
आपके द्वारा ही श्री निजांनद आश्रम रतनपुरी की स्थापना की गई जहाँ से सद्गुरु निजानंद स्वामी श्री देवचंद्रजी द्वारा पहले से की गई भविष्यवाणी अनुसार ही पुनः ईस्वी सन् 1971 में अखिल भारतीय जागनी अभियान का शुभ प्रारम्भ हुआ।
श्री प्राणनाथ जी प्रदत्त नूरी तारतम्य ज्ञान को विश्वव्यापी पहचान देने एवं समुदायिक एकता हेतु निर्भीकता पूर्वक उदघोष किया कि आज से हमारा तारतम्य ज्ञान यह होगा। जो प्राचीन हस्त लिखित प्रतियों में उपलब्ध है। यथा:-

**निजनाम श्री जी साहिब जी, अनादि अक्षरातीत।**
**सो तो अब ज़ाहिर भए, सब विध वतन सहीत।।**

जागनी रत्न लीला के इस नूरी तारतम्य के प्रचार प्रसार के लिये आपने अपना अविस्मरणीय योगदान प्रदान किया। समाज में इस नवीन परिवर्तित मंत्र को अभी तक एक वर्ग विशेष द्वारा ही मान्यता मिल सकी है। परन्तु इस तारतम के बल पर ही आपने गुजरात, उत्तर प्रदेश इत्यादि प्रान्तों में

मुसलमानों को ललकारा! कि आप लोग जिस आख़रूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज़्ज़माँ का इंतज़ार हिज़री चौदहवीं सदी की मुद्दतों से कर रहे हो, वह अपने वचन अनुसार दसवीं-ग्यारवीं हिज़री सदी में प्रकट हो गए हैं। जिसका प्रमाण मस्जिद-ए-नबवी मदीना से आए चार वसीयतनामः है। अतः आपके पूर्णतः सत्य वचनों को पहचान कर परब्रह्म स्वरूप प्राणनाथ जी पर विश्वास करके अनेकों मुस्लिमों ने सिरातुल-मुस्तक़ीम (सत्य सरल मार्ग) पर अग्रसर हुए। इनमें से एक प्रमुख नाम सूफ़ी मुहम्मद यूसूफ़ क़ुरैशी साहिब, बुलंदशहर वालों का है। जिन्होंने अपने परिवार समेत ''तारतम'' ग्रहण करके हक़ की बैत लेकर मुहम्मद साहिब की शिफ़ायत का सीधा राह पाकर अपने पूरे वंश को धन्य किया। इसका प्रतिफल स्वरूप रोज़-ए-हश्र (महाप्रलय दिवस) को उनके सबसे पहली सफ़ (पंक्ति) में मौजूद रहकर वास्तविक सूफी होने का गर्व मिलेगा आमीन! इसके अतिरिक्त सरदार प्रीतम सिंह अमृतसर, पँजाब ने भी तारतम ज्ञान ग्रहण किया। नागालैंड के पास्टर चंद्र प्रकाश जी ने भी तारतम ग्रहण किया। भारतवर्ष में एवं विदेशों में भी स्थान-स्थान पर जागनी अध्यात्मिक शिविर लगाकर समस्त सुंदर साथ एवं जन साधारण को झकझोरा! कि आप केसरी सिंह-शेर हो। अतः जागृत होकर प्राणनाथ जी की श्री मुखवाणी को समस्त ब्रह्माण्ड में प्रचारित-प्रसारित कर दो जिससे परब्रह्म के वचन अनुसार न्याय दिवस के अवसर पर कोई यह कहने का दुस्साहस न कर सके। कि हमें तो श्रीप्राणनाथजी का जागनी संदेश नहीं

मिला। समस्त सुंदर साथ को अपनी रहनी सुधारने, श्री मुखवाणी प्राणनाथ जी स्वरूप क़ुल्ज़म साहिब का चिंतन, चितवनी द्वारा स्वयं की आत्म-जाग्रत करने का दिव्य, अलौकिक, अनुपम संदेश देकर आप दैहिक पंच-भौतिक तन से तो ईस्वी सन् नवंबर 2000 में ब्रह्मलीन अवस्था में योगनिद्रा द्वारा समाधिस्थ हो गये परंतु आज भी सुंदरसाथजी के हृदय सम्राट बने हुए हैं। आपकी भव्य समाधि श्री निजानंद आश्रम, रतनपुरी ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर, उत्तर प्रदेश के भव्य प्रांगण में स्थित है। आज भी वह नूरी अलौकिक अध्यात्मिक ब्रह्मज्ञान से रहनुमाई नेतृत्व कर रहे हैं जिससे आज भी अनेकों नए लोग प्रेरणा लेकर आत्म जाग्रत होकर धर्म-मार्ग पर अग्रसर हो रहे हैं। आप जागनी रतन सरकार साहब जी द्वारा अपने जीवन में ही भविष्य की जागनी लीला हेतु एक पंच व्यक्तियों के समूह को विद्वत मण्डल गठन किया गया था। यथा:-

(1) श्री राजन स्वामी जी (2) श्री विजय आहूजा जी (3) श्री रमण भाई पटेल जी (4) श्री विंध्याचल दास जी (5) श्रीमती लता बहन जी त्यागी।

## श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा की स्थापना

सरकार साहब के अध्यात्मिक कार्यो को द्रुत गति से अग्रसर करने वाले ब्रह्मज्ञानी महात्मा श्री राजन स्वामी जी धर्मवीर जागनी रतन सरकार साहिब श्री जगदीश चंद्र जी के साथ ही निजानंद आश्रम रतनपुरी के भव्य प्रांगण में ही साधना की। आपने श्री मुखवाणी क़ुल्जुम स्वरुप साहिब के रहस्य ब्रह्मलीन सद्गुरु महाराज राम रतन के अनुगामी धर्मवीर श्री जगदीश

चंद्र जी द्वारा समझे। आप श्री राजन स्वामी जी हरमन प्रिय मृदुभाषी, ब्रह्मवाणी के प्रकांड विद्वान, संस्कृताचार्य, योगिराज एवं संस्थापक श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा, ज़िला सहारनपुर, उत्तर प्रदेश के भव्य प्रांगण में निवास करते हैं। आपने श्री मुखवाणी के रहस्यों को श्री प्राणनाथ जी की मेहर कृपा दृष्टि से एवं परमहंस महाराज श्री राम रतन दास जी की असीम अनुकंपा (कृपा) से पाया। उनके अनुगामी महान सद्गुरु धर्मवीर जागनी रत्न श्री जगदीश चंद्र जी सरकार साहिब की प्रेरणा से ही ग्रहण करके जन-साधारण में ज़ाहिर (प्रकट) कर रहे हैं जिससे कि तारतम्य ब्रह्मज्ञान रूपी यज्ञ समस्त संसार में प्रसारित हो जाए एवं विश्व का कल्याण हो।

आपका श्री राजन जी जन्म उत्तर प्रदेश के ही बलिया शहर के एक ग्राम में धर्मनिष्ठ माता-पिता के यहाँ हुआ। आप बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि, अंतर्मुखी एवं सत्य के जिज्ञासु रहे हैं।

अतः आपने परम सत्य सद्गुरु परब्रह्म स्वरूप प्राणनाथ जी की खोज करने के उद्देश्य से बीस वर्ष की अल्पायु में सन्यास ले लिया। आपने आर्य समाज के प्रकांड विद्वान महानुभावों के सानिध्य में रहकर वेद शास्त्र एवं उपनिषदों तथा योगासनों का जटिल अभ्यास किया। अंततः अपनी ब्रह्मज्ञान जिज्ञासा को शांत करने हेतु ब्रह्मज्ञान की साधना प्रारम्भ की। तत्पश्चात खोजते-खोजते एक दिन जब लखनऊ में महान सद्गुरु सरकार साहब से धर्म गोष्ठी में मिलन हुआ, तो मन प्रफुल्लित एवं आनन्दित हो गया। कि यही पर

है ''सत्यं ज्ञान अनंत ब्रह्म'' यथा:-

**खोज बड़ी संसार रे तुम खोजो साधो, खोज बड़ी संसार।**
**खोजत-खोजत सद्गुरु पाइए, सद्गुरु संग करतार।।**

(किरंचन

26/1)

तत्पश्चात आप रतनपुरी आश्रम में निवास करते हुऐ ब्रह्मविद्या का अध्ययन चिंतन व मनन करने लगे। आप द्वारा निजानंद आश्रम रतनपुरी को साहित्य सृजन में अनमोल योगदान दिया गया। आपके द्धारा विरचित सत्यांञ्जलि भागवत याथार्थ्यम् एवं बोध-मंजरी इत्यादि के अतिरिक्त समस्त ग्रन्थों में श्रद्धा, समर्पण स्वरूप महान सद्गुरु धर्मवीर जागनी रतन श्री जगदीश चंद्र जी के नाम को ही दर्शाया गया है।

इसी कारण सद्गुरु ने भी आपकी निष्काम सेवा भाव से प्रसन्न होकर आपको अलौकिक तारतम रूपी ब्रह्मज्ञान अर्थात निज बुध की शोभा प्रदान की। सरकार साहब के ब्रह्मलीन होने के पश्चात परब्रह्म स्वरूप प्राणनाथ जी प्रियतम के विरह में व्याकुल होकर आपने निरंतर चार वर्ष श्री चोपड़ा जी मंदिर पन्ना बुंदेलखण्ड, म०प्र० में एकान्तवास में जटिल ज्ञान, प्रेम साधना की, अंतोगत्वा परब्रह्म स्वरूप श्री जी साहिब महमत प्राणनाथ जी से साक्षात्कार किया। अंतत: श्रीजी साहिब जी की मेहर सद्गुरु परमहंस रामरतन दास जी के दिव्य दिग्दर्शन व सरकार साहब जी की ही प्रेरणा से श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा, ज़िला सहारनपुर, उत्तर प्रदेश की स्थापना हुई।

आपने पुनः अनेकों ग्रन्थों की रचना की है जैसे - हमारी रहनी, ज्ञान मंजूषा, चितवनी इत्यादि। आपके द्धारा श्रीजी साहिब महमत प्राणनाथजी की जागनी लीला को समस्त संसार में प्रकट करने हेतु ही श्रीजी साहिब जी की बीतक को ''दोपहर का सूरज'' एवं परमहंस महाराज रामरतनदास जी की बीतक को ''प्रेम का चाँद'' उपन्यास की शैली मे प्रस्तुत किया, जिससे कि आम जन व सुन्दर साथ श्री जी की जागनी लीला का रसपान करके अपने जीवन को एक आदर्श रुप में भी निर्वाह कर सके। आजकल आप श्री मुखवाणी क़ुल्ज़ुम साहिब का व्याख्यात्मक टीका करके किरंतन (कीर्तन), सिंगार (श्रृँगार), परिकरमा (परिक्रमा), सिंधी ग्रंथ को प्रकाशित करवाया है। अन्य ग्रन्थों के टीका कार्य में व्यस्त हैं। इस टीका कार्य द्वारा पूर्व के सभी सम्माननीय टीकाकारों को सम्मान प्रदान करते हुए भावार्थ के साथ अर्थ भी लिखे जा रहे हैं जिससे कि प्रसंग के अनुसार अर्थ अधिक सुस्पष्ट हो जाता है। अंततः सुंदरसाथ जी सुगमता से श्रीजी की मुखवाणी को आत्मसात करके धर्ममार्ग पर अग्रसर होकर आत्म-जागृति के परम पुनीत लक्ष्य को सहजता से पा सकेगें।

समस्त धर्मो के पवित्र धर्म ग्रन्थों में वर्णित है कि अठ्ठाईसवें कलियुग में ही परब्रह्म स्वरूप, आनन्द अंग श्यामा जी व उनके ब्रह्मांग्नाऐं तन सुंदरसाथ जी, अक्षर ब्रह्म, देवगणों सहित संसार में अवतरित होंगे एवं समस्त प्राणियों को जन्म-जन्मांतर के अज्ञानता रूपी बंधन से मुक्ति देंगे। अंततः जन-जन को ब्रह्मज्ञान रूपी तारतम्य ज्ञान से आत्म

बोध देंगे। तत्पश्चात सभी प्राणी सहज रूप से ही अद्वितीय आनन्दमयी परम शाश्वत मोक्ष को प्राप्त करके अखण्ड होंगे। यथा:-

**''क्या देखी हम दुनिया, जो इनको न करे अखण्ड''**

(श्री प्राणनाथ जी वचनामृत)

अत: विचारिये साथियों कि विक्रमी संवत 1735, ईस्वी, सन 1678 हिजरी, 1090 में वर्णित संकेतिक धर्म सुधारक श्री विजयाभिनंद बुध निष्कलंक अवतार कल्कि, आख़रूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज़्ज़माँ हज़रत ईसा रूहुल्लाह स्वरूप सरदार महमत मे'राज, श्रीजी साहिब महमत प्राणनाथ जी के स्वरूप द्वारा अठ्ठाईसवें कलियुग में प्रकट होकर समस्त संसार के जन साधारण को उनकी ही जन भाषा हिंदी हिंदवी या हिंदुस्तानी में स्वलीला अद्वैत अनन्य प्रेम, आनन्द, समानता, एकता, मानवता, विश्वबंधुत्व की पवित्र भावना के अलौकिक आत्म जागृति जागनी संदेश का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। यथा:-

**''सबसे सुगम जान के कहूँगी हिंदुस्तानी''** (सनंध)

आपका पुनीत लक्ष्य अखिल विश्व को ब्रह्मज्ञान स्वरूप क़ुल्ज़म साहिब के वचनामृत से जागृत कर प्रबोध देना है। यथा:

**''सुख सीतल करूँ संसार''**

(मुक़द्दस किताब क़ुल्ज़म साहिब)

साथियो! अनादि काल से धर्म शास्त्रों के रहस्यमयी प्रश्नों को निर्मूल करके एक ही परब्रह्म प्रियतम स्वामी स्वरूप महमत प्राणनाथ जी को प्रसन्न करके दोनो लोको में

स्वयं को धन्य-धन्य कर ले। यथाः-

**जिन जानों सास्त्रों में नही, है सास्त्रों में सबकुछ।**
**परजीव सृष्ट क्यों पावही, जिनकी अक़्ल हैं तुच्छ।।**

आईऐ उन ब्रह्ममुनियों, ब्रह्मज्ञानियों, ब्रह्मात्माओं, ब्रह्मसृष्टि, मोमिन ख़ास-उल-ख़ास रूहों, मुमुक्षूजन चूजन प्यूयिल (Choosan People) को उनके लक्षणों द्वारा पहचान कर ले अपने जीवन में प्रियतम स्वामी से प्रेम-सेवा की रहनी को आत्मसात करके स्वयं का भी उद्धार कर अखण्ड मोक्ष प्राप्त लेवे। यथाः-

**''इश्क़ सों सेवा करूँ सब अंगों साक्षात''**

(किरंतन 62/17)

वर्तमान समय में श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा, ज़िला सहारनपुर, उत्तर प्रदेश में करीब पचास-साठ विद्यार्थी एवं महात्मा दूर-दूर प्रदेशों यथा- उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पँजाब, राजस्थान, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, गुजरात, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, असम, दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल, मणिपुर, नागालैण्ड, सिक्किम, अरूणाचल प्रदेश एवं विदेशों में से नेपाल, भूटान इत्यादि से ब्रह्मविधा रूपी तारतम ज्ञान क़ुल्जुम शरीफ़ / स्वरूप साहिब, बीतक साहिब, एवं चितवन, ध्यान, योग का निःशुल्क प्रशिक्षण ले रहे है। जिससे कि धर्मवीर जागनी रत्न सरकार साहिब ब्रह्मलीन सद्गुरू श्री जगदीश चंद्र जी का दिवः स्वप्न पूर्ण हो सके।

इस ज्ञान यज्ञ में सेवा रूपी आहूती से ही श्री जी साहिब महमत प्राणनाथ जी श्री विजयाभिनंद बुद्ध निष्कलंक

अवतार आख़रूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज़्ज़माँ, ईसा रुहुल्लाह के तारतम्य ज्ञान, इल्म-ए-लदुन्नी, शार्प सोर्ड (Sharp Sword) ज्ञान की तलवार रूपी ब्रह्मवाणी को समस्त ब्रह्माण्ड में प्रचार-प्रसार करने का महान उद्देश्य पूर्ण हो सकेगा। आपके इस पुनीत कार्य में अनेक सुन्दर साथ तन,मन, धन से सक्रिय है। अत: हमें भी इस ब्रह्मज्ञान रूपी तारतम्य ज्ञान के प्रचार-प्रसार रूपी अश्वमेध यज्ञ, में अपनी स्वच्छिक सेवा, समपर्ण रूपी आहूती प्रदान करनी चाहिऐ। क्योकि **''और कछु ना इन सेवा समान''** जिससे कि समस्त संसार में ब्रह्मवाणी का डिंडिम घोष हो सके। एवं श्री जी का विश्व जागनी का लक्ष्य प्राप्त हो सके। यथा:-

**''ब्रह्मसृष्टि और दुनिया देऊं जगाए''**

आपके अतिरिक्त एक विद्वत मण्डल जिसमें चर्चनी विषेषज्ञ श्री विंध्याचल दास जी शास्त्री, वाणी विशारद साहिबजादा श्री विजय जी आहूजा जी, श्रीमति लता त्यागी जी, श्री अमृतराज जी निजानंदी अखिल जागनी अभियान को समर्पित समर्थवान प्रबंधकर्ता श्री रमन भाई पटेल जी, सुंदर साथ को प्रेम-एकता के सूत्र में पिरोकर समाज को एक नई दिशा देने हेतू प्रयत्नशील है।

इसी क्रम श्रृँख्ला में धर्म के प्रचार-प्रसार हेतू हिम्मत नगर(गुजरात) से ही संबधित अग्रणी सुंदरसाथ विनम्र, सस्ँकारी, सेवा भावी, तन-मन-धन से समर्पित मनु भाई पटेल ने पूर्ण समर्पणता से एक टैलीविज़न सीरियल **''श्री प्राणनाथ जी''** का निर्णाण करवा कर प्रसारित किया है। आजकल इलैक्ट्रानिक मीडिया के द्वारा प्रचार-प्रसार करके

ही श्री निजानंद आश्रम रतनपुरी, बड़ोदरा एवं प्राणनाथ जी मंदिर बड़ौदा श्यामला जी श्री प्राणनाथ जी ज्ञानपीठ एवं विभिन्न प्राणनाथ मंदिरों के कोष की सार्थकता सिद्ध होगी। जिससे कि श्री जी के जागनी अभियान द्वारा उदघोषित लक्ष्य पूर्ण साकार होगा। यथा-

**''जागो अणे जगाओं फ़रमान है घणी का''**

**''ए सुख देऊँ ब्रह्मसृष्टि को, तो मैं अँगना नार''**

**''सब साथ करूं आपसा, तो मैं जागी परवान''**

इससे ही मानवता को अखण्ड ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति होगी। एवं संसार में विश्व बधुत्व, प्रेम-सौहार्द की स्थापना होगी। अतः परमधाम का यह वचन फलीभूत हो जाएगा। अर्थात आत्म-जागृति के लिए दिया गया प्रबोध का प्रतिफल सर्वोच्च है। अतः रहनी के स्तर को सहज रूप में प्राप्त करके अर्थात चरित्र निर्माण ही आत्म प्रबोध का मूल मंत्र है। क्योकि एक मछली समस्त जलाशय को दूषित कर देती है। इसी प्रकार से एक दुश्चरित्र प्राणी स्वयं के एवं अन्यों के भी अधोः पतन का कारण बनता है।

प्रिय सुंदर साथ जी! यहाँ संसार में भी धनवान नही चरित्रवान, व्यक्ति स्वयं भी धंन-धंन एवं परमधाम में भी धंन-धंन होगें। लेकिन यह सभी कुछ कार्य श्री जी मेहर से ही संभव है। क्योकि धाम-धणी की सार्मथ्य के अतिरिक्त समस्त शक्तियां गौण है।

अतः स्वयं परब्रह्म प्राणनाथ जी स्वयं ही विभिन्न भौतिक तन धारण कर स्वरूप अपनी ब्रह्मात्मा सूरताओं को जाग्रत करके आत्म प्रबोध करा रहे है। कि हे ब्रह्म प्रियाओं!

यह मायावी संसार क्षण-भंगुर है। जबकि आप सदैव ही शाश्वत है। अतः फिर क्यों माया से पस्त हो रहे हो? तो आइऐ जाग्रत होकर अपने निज-आन्नद को स्मरण करके आन्नद-विभोर हो। यथा:-

**धनी महामत हँस ताली दे, साथ उठा हँसता सुख ले।**

(प्रकाश हिंदुस्तानी

प्र० 37/118)

## ''कलियुग के लक्षण''

सब तरफ पाप, अत्याचार होना व अधर्म का बोलबाला।
राजा द्वारा प्रजा से अन्याय करना, इंसाफ का न मिलना।
स्त्री द्वारा पति को त्यागकर, परपुरुष से भी नाता जोड़ना।
माता-पिता का अनादर व उनसे अपशब्दों का प्रयोग करना।
सदगुरु के निर्देशो को न मानना, तथा उन पर लांछन लगाना।
धुमपान शराब, अफीम, गुटका-तम्बाकु इत्यादि नशों मे रत रहना
सत्संग मे न जाकर मायावी संसार की कुसंगित में मेलजोल बढ़ाना। महापुरूषों के सदुपदेशों को न मानकर मनमर्जी से आचरण करना।
सत्संगी पर क्रोधित होना तथा उनको अनादर के शब्द कहना।
ब्रह्मज्ञान के स्थान पर अज्ञान का ही प्रचार-प्रसार होना।
दया, दान, धैर्य, क्षमा, प्रेम व परोपकार आदि का होना।
शिष्यो द्वारा गुरुओं का सत्कार न करना व दृष्ट्रि बचाना।
संसारिक गुरु का शिष्य से भौतिक द्रव्य की इच्छा करना संसार में ज्ञान के बदले में भौतिक द्रव्य माँगना, ज्ञान को बेचना।

दूसरों की परनिन्दा में रस मग्न आनंद होकर वाद-विवाद करना।
माँस, मदिरा, शराब इत्यादि का सेवन करके राक्षस वृत्ति अपनाना।
साधु वेष बनाकर भिक्षा ग्रहण करना तथा मुफ़्त खाना पीना।
विद्धानों का समाज में अनादर होना एवं मुर्खो का आदर होना।
सदैव दैहिक मृत्यु से बचने के ही उपाय में संलग्न रहना।
स्वयं की कमाई में संतोष न होना, स्वार्थ सिद्धि में लगे रहना।
नैतिक, आचरण न करके भ्रष्टाचार से आजीविका प्राप्त करना।
निरीह साधुजनों को भोजन देने के स्थान पर अपशब्द कहना।
स्वयं से अधिक ज्ञानवान बुद्धिमान किसी को भी न समझना स्वयं भू विद्वानों, मूढ़ के द्वारा धर्म के भेद रहस्य प्रकट न होना।
समाज में चतुर को सम्मान होना, बुद्धिमान का अपमान होना।
शिष्यो द्धारा गुरु माताओं से भी व्यभिचार भोग-विलास करना।
समाज में सर्वत्र राक्षस प्रविृत की दुर्भावना का ही प्रचारित होना।
मनुष्यों द्वारा नैतिक की जगह अनैतिकता का प्रर्दशन करना।
संसारिक गुरु द्वारा अपनी ही शिष्या के साथ दुराचार करना।
प्राणीयों के हृदय में दया न होना तथा भाई का हक़ मारना।

देश में निर्धनों का जीवन-यापन अत्यधिक ही कष्टप्रद होना।
समाज में ऊँच-नीच, जात-पात का मिथ्या आडम्बर बना रहना।
सम्मानीय शुद्ध धर्म-कर्म की मान्यताओ का निरंतर क्षीण होना।
दुष्ट राक्षसो द्वारा साधु वेष धारण करके पाखंड करवाना।
विद्धानों से नम्रता दूर होकर, मिथ्या अंहकार मे लिप्त रहना।
अपने विकार न देखकर दूसरो के गुण-अवगुण गिनना। इत्यादि

## सुंदर साथ जी की संसार में रहनी

ब्रह्ममुनियों का पल-पल परब्रह्म के प्रेम में तल्लीन रहना।
ब्रह्मात्माओ के द्वारा स्वयं की गुण-इंद्रियों नियंत्रित में करना।
अपने स्वभाव में सज्जनता, परहित भाव का समावेश रखना।
मन में सभी के लिये प्रेम, दया व परोपकार की भावना होना
सद्गुरु की सेवा में समर्पित होकर सदा ध्यान में तल्लीन रहना।
कभी भी झूठ न बोलना व दूसरो को भी कोई कष्ट न देना।
अपने मन में कभी भी गलत बातें लोभ-लालच न सोचना।
किसी की भी निंदा चुगली न करना एवं सदैव कम बोलना।
अपना खाना-पीना आहार शुद्ध सात्विक व निर्गुण करना।
मायावी नश्वर संसार में स्वयं जल कमल के समान रहना।
इस मायावी दुनिया को नश्वर असत्य स्वप्न मात्र ही समझना।
सदैव ब्रह्मज्ञान के ही चिंतन-मनन में अभ्यास रत रहना।
निरतंर चितवन, ध्यान योग ज्ञान के अभ्यास में लीन रहना।
सुंदर साथ की सेवा में सदैव तन, मन, धन से तत्पर रहना।
अपने काम, क्रोध अंहकार इत्यादि विकारो को सर्वदा त्यागना।
दैहिक मिथ्या मान-अभिमान को सदैव के लिए नष्ट कर देना।
स्वयं त्यागमयी साधारण वेष प्रतीक श्वेत वस्त्र धारण कर लेना।
कलियुग में अवतरति ब्रह्मज्ञानियो की सेवा यथा संभव करना।
सतगुरु से छल न करना अर्थात सद्वैव निश्छल आन्नद में रहना।
सदगुरु के दैहिक आचरण को न देखकर ब्रह्मज्ञान से पहचानना।
कभी भी किसी को भी कड़वे वचन न कहना। नम्रता से बोलना
क्रोध को त्यागकर सात्विक जीवनयापन करना इत्यादि